सूरज रोटा' का व्रत

चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में होली के बाद के पहले रविवार को 'सूरज रोटा' का व्रत, पुत्र की मंगल कामना के लिये, किया जाता है।

पूजा का सामान-

जल को लोटा, कुमकुम, चावल, रुपया, दीपक, अगरबत्ती, गेहूँ के आटे का बिना नमक का छेद वाला रोट, तला या सिका हुआ। यह रोट सभी बेटों के नाम से अलग-अलग बनाया जाता है।

पूजा विधि-

आंगन में या छत पर जगह साफ और पोंछ कर खड़िया मिट्टी से सूरज माँडकर उस पर नौ टिक्कियाँ कालज तथा कुमकुम की लगानी चाहिये। फिर जल चढ़ाकर पूजन सामग्री से विधिवत पूजन करना चाहिये। आरती के बाद रोट को आंचल में छिपाकर छेद से सूरज भगवान का दर्शन करना चाहिए। अन्त में रोट को सूरज के मांडने पर रखकर इसके चारों ओर जल की धार देनी चाहिये। पूजा के बाद यह रोट गाय को देना चाहिये। यह रोट जूठा भी नहीं छोड़ना चाहिए।

कहानी

एक माँ बेटी थी। माँ गायों को चराने जाती थी। चैत्र का महीना आया सूरज रोटे का व्रत आया। माँ रविवार का व्रत करती थी। बेटी ने कहा माँ मैं भी व्रत करूँगी, माँ ने कहा तूँ क्या करेगी। बेटी ने जिद की तब माँ ने कहा अच्छा मैं गायों को चराकर आती हूँ, तुम दो रोटे बना लो, फिर पूजा करेंगे। बेटी ने ऐसा ही किया। माँ का रोटा तैयार हुआ इतने में सूरज भगवान् एक साधु का वेश धारण करके आए और आवाज लगाई घर की देवी ''भिक्षान्न देहिं'' ।

तब बेटी बोली महाराज माँ का रोटा बना है, मेरा रोटा अभी बना नहीं। बेटी ने मन में विचार किया की घर में आया हुआ साधू भूखा जायेगा। अत: बेटी ने माँ के रोटे में से थोड़ा टुकड़ा तोड़कर साधू को दे दिया। माँ गायें चराकर घर आई तब बोली, ला बेटी भूख लगी है रोटा दे। बेटी ने थाली परोस दी। खाँड़ा रोटा देखकर माँ ने पूछा, तब बेटी बोली एक टुकड़ा तोड़कर साधू को दिया है। इतना सुनते ही माँ क्रोधित होकर बेटी पर बिगड़ी और जिद् पकड़ कर पागलों के जैसे बोलने लगी-

''धी (बेटी) रोटो दे, पणसागी रोटो दे,
पण पूरो रोटो दे।
धी रोटो दे, रोटा माँ की कोर दे,
मेरा दे, और सागी दे ।।''

इस प्रकार माँ बारम्बार पुकारती सारी नगरी में घूमने लगी। बेटी ने बहुत मनाया कि तुम मेरा ले लो, पर वह नहीं मानी। बेटी सुन-सुन कर बेजार होकर वहाँ से भागी, पीछे-पीछे उसकी माँ पागलों की तरह पुकारती चली गई। लड़की भागती-भागती वीरान जंगल में पहुँच गई। डर के मारे विश्राम करने के लिये एक पीपल के झाड़ पर चढ़ कर बैठ गई। ऐसे करते-करते दो चार दिन हो गये। वह भूखी प्यासी बैठी थी, सूरज भगवान को उस पर दया आई। सूरज भगवान ने पानी का लोटा और चूरमा के लड्डू की कटोरी उसको भेज दी।

एक दिन गाँव के राजा का कँवर शिकार खेलने गया। वापस लोटते समय वह उसी पीपल के झाड़ के नीचे आकर ठंडी छाया में बैठ गया और बोला यहाँ कितनी ठंडी छाया है। वह भूखा प्यासा था, बेचैन था, पर इस वीरान जंगल में पानी कहाँ ढूंढे। बोला कोई पानी पिला दे तो अच्छा हो, ऐसा कहते ही लड़की ने ऊपर से थोड़ा पानी गिराया। तब फिर से राजा का कँवर बोला मुझे तो बहुत भूख लगी है कोई खाने को दे तो अच्छा हो, तब उस लड़की ने ऊपर से चूरमे का लाडू गिराया । राजा के कँवर की भूख मिट गई। वह कँवर विचार करने लगा, यहाँ कोई है। ऐसा विचार करके अपने सिपाहियों से बोला ऊपर कोई आदमी है, जाकर देखो। सिपाहियों ने झाड़ पर चढ़ कर सब तरफ देखा पर उन्हें कुछ दिखा नही। तब राजा का कँवर स्वयं ऊपर चढ़कर पत्तों-पत्तों में देखने लगा तब यह लड़की बैठी हुई दिखी । राजा का कँवर बोला तुम कौन हो? भूत हो कि पलीत हो? देवता हो कि मानव हो? लड़की बोली मैं मानव हूँ साहूकार की बेटी हूँ । राजा का कँवर लड़की को पूछने लगा कि तुम मेरे साथ विवाह करोगी क्या?

तब लड़की बोली, राजाजी आप तो नगरी के राजा हो, मैं एक अनाथ लड़की हूँ। मेरे घर द्वार परिवार कुछ नहीं हैं। राजा माना नहीं, बोला मैं तुम्हारे साथ विवाह करूँगा। पंडित और बाजा बुलाकर पीपल के झाड़ के नीचे उससे विवाह करके आपने साथ ले गया और राजी खुशी रहने लगा।

वापस चैत्र का महीना आया उसने सूरज रोटा का व्रत किया, रोटी घी और शक्कर खाने लगी। जिठानियों से देखा नहीं गया। राजा से जाकर शिकायत की। राजा बोला मैं आँखों से देखी मानता हूँ, कानों से सुनी नहीं। जिठानियों ने राजा को आड़ से दिखाया। राजा कमरे में गया, राजा को देखकर उसने रोटा घुटने के नीचे छिपा लिया। राजा ने पूछा घुटने के नीचे क्या है? उसने सूरज भगवान से प्रार्थना की हे भगवान् ! आप मेरी लाज रखना। घुटने के नीचे देखे तो सोने का चक्र था। राजा ने पूछा– यह तुम्हारे पास कहाँ से आया? रानी बोली यह मेरे दुबले पीहर की भेंट है।

इसके बाद वह माथा धोकर झरोखे में खड़ी होकर सुखाने लगी। नीचे से माँ निकली वह धी रोटो सागी कोर कहती घूम रही थी, बेटी को पहचान कर बोली।

''धी रोटो दे, पण सागी रोटो दे,
पण पूरो रोटो दे।

धी रोटो दे, रोटा की कोर दे,
मेरा दे और सागी दे।।''

बेटी ने सोचा मैं राजा की रानी हूँ, लोग क्या कहेंगे। सिपाहियों को हुक्म दिया, उन्होंने डोकरी को लाकर एक कोठे में बन्द कर दिया। जब राजा को मालूम पड़ा कि रानीजी ने एक डोकरी को ताला में बन्द कराया है। तब राजा बोला रानीजी चाबी देवो। उसने छ कोठों की चाबी दी। सातवें कोठे की चाबी नहीं दी। राजाजी ने हठ करके सातवें कोठे की चाबी लेकर कोठा खोलकर देखा तो सामने सोने की प्रतिमा खड़ी थी। जब राजाजी ने रानीजी से पूछा यह क्या है? रानी ने उत्तर दिया यह मेरे दुबले पीहर की भेंट है।

राजा के मन में आई ऐसा ससुराल तो मुझे देखने जाना है। राजाजी बोले मुझे आपका पीहर देखना है। रानी बोली राजाजी मेरा पीहर कहाँ है? आप तो मुझे पीपल के झाड़ के नीचे से विवाह करके लाये थे। राजाजी माने नहीं हठ करके बैठ गये। तब रानीजी ने सूरज भगवान् की प्रार्थना की हे भगवान ! राजा का हठ पूरा करो और सवा प्रहर का पीहरवासा माँगा। सूरज भगवान ने स्वप्न में आकर रानी को सवा प्रहर का पीहर वासा पीपल के झाड़ के नीचे दिया। राजा रानी, रानी के पीहर गये। कँवर, नौकर, चाकर, हाथी, घोड़े साज सामान, सब साथ में लिया। जिस झाड़ के नीचे से रानी को लाये थे उस झाड़ के पास पहुँचे। आगे क्या देखते हैं, एक सुन्दर नगरी बसी है, वहाँ पूरा परिवार था। कोई कहता मासी आई कोई कहता बहिन आई, कोई कहता भुआ आई, कोई कहता मासाजी आये, कोई कहता जीजाजी आये कोई कहता फूंफाजी आये, भौजाइयाँ कहती बाईजी आये। नगरी का नाम सूरज नगरी था। राजा ऐसी ससुराल देखकर प्रसन्न हुआ और परिवार देखकर बहुत आनन्दित हुआ। राजा, रानी वहाँ जीमें, खूब पावणाचार हुआ, आदरमान हुआ। सवा प्रहर होने लगा तब रानीजी राजाजी से बोली अब हम लोग वापस घर चलें। राजाजी ने कहा इतना अच्छा ससुराल इतनी जल्दी कैसे छोड़ें। ऐसे ससुराल में तो महीना भर भी रहे तो जी नहीं भरे, छोड़ कर कैसे चले। रानीजी ने सोचा कि राजाजी तो चलेंगे नहीं। रानी कँवर के चुट्टियाँ भरकर रुलाने लगी, कँवर रोने लगा। राजा को बोली यहाँ कोई देवता का दोष हो गया वापस पलटना ही ठीक है। राजा-रानी सीख लेकर निकले। राजा जल्दी में एक घोड़े का ताजणा और अपने पाँवों की जूतियाँ यहाँ भूल गये। थोड़ी दूर आगे गये पीछे याद आया। जब वे बोले रथ वापस फिरावो, मेरा ताजणा ओर जूतियाँ रह गई हैं। रानी बोली इतना तो धन दिया है, इतने से के लिये क्यों वापस फिरते हैं? राजाजी ने सुना नहीं, वे वापस फिरे, आगे गये तो झाड़ के नीच जूतियाँ पड़ी थी और ताजणा झाड़ पर लटकता था। पत्तले पड़ी थी, कोई परिवार नहीं था, और नगरी कहीं दिखी नहीं। जब राजा जी पूछने लगे यह क्या रानी जी ? तब रानी जी ने उत्तर दिया महाराज मैं सूरज रोटा का व्रत करती हूँ, सो सूरज भगवान ने मेरी लाज रखी है, अभी तक आपने जो देखा है वह सब उन्हीं की कृपा से मिला है और आप मुझे झाड़ के नीचे से लाये थे सो वही मेरा पीहर हुआ। आपके हठ के कारण मैंने सूरज भगवान से सवा प्रहर का पीहरवासा माँगा था। सूरज भगवान ने मुझे सवा प्रहर का पीहरवासा दिया था । इसीलिये आपकी दोनों चीजें वहाँ मिली। पर मेरी माँ का रोटा खाँड़ा हुआ इसलिये वह पागल हो गई। वह नगरी में आई थी तब मैंने उसे कोठे में बन्द करवा दिया और वह सोने की प्रतिमा हो गई।

फिर राजाजी ने नगरी में ढिंढोरा पिटवाया कि चैत्र के रविवार को सूरज रोटा का व्रत करना। पीहरवासा के लिये सब लोग सूरज रोटा का व्रत करने लगे।

हे सूरज भगवान ! उसको जैसा पीहरवासा दिया वैसे सबको देना। उसपर कृपा की वैसे सब पर करना। कहानी कहने वाले पर, हुँकारा देने वाले पर, सब पर कृपा करना, हे भगवान! सकल को टूठना, सकल के छेड़ हमें भी टूठना।

शीतला अष्टमी

चैत्र कृष्ण अष्टमी को शीतला अष्टमी व बासेड़ा आता है। इस दिन शीतला माता की पूजा करते हैं, और ठंडा भोजन करते हैं। शीतला माता की पूजा, चेचक के प्रकोप से, परिवार को सुरक्षित रखने के लिये की जाती है। ऐसी मान्यता है कि जिस घर में स्त्रियाँ शुद्ध मन से इस व्रत को करती हैं उनके परिवार की शीतला माता अवश्य रक्षा करती हैं। इस दिन घर में चूल्हा नहीं जलाते हैं। (शीतला माता की पूजा ठंडी रसोई से करते हैं) पूर्वजों ने कहा है कि माताजी ठंडे से खुश रहती हैं, गर्म चीज से उनके शरीर में छाले पड़ जाते हैं। अत: इस दिन घर के सभी सदस्यों को ठंडा भोजन करना चाहिये। इसके लिये अष्टमी की पहली रात को पूजनार्थ खाने पीने की सब ठंडी रसोई बनाकर अलग रख देनी चाहिये। अष्टमी को माता की पूजा करके, ठंडे भोजन का भोग लगाना चाहिये।

पूजा का सामान-

जल का लोटा, कच्चा दूध, दही, मक्खन, लाल कपड़ा हल्दी, कुमकुम, काजल, मेंहदी, मोली, फूल, मिट्टी का दिया, भीगा हुआ चना, मोठ, बाजरा आदि।

वैसे माता का मुख्य भोग, गुड़ की राबड़ी बाजरे की रोटी और चावल है। इसके अलावा जो भी रसोई बनाना हो बनाई जा सकती है। माता को मीठा पसन्द है।

पूजा की विधि-

चैत्र कृष्ण अष्टमी को सुबह शीतालमाता की पूजा करके, माताजी को ठंडा करना चाहिये। कहीं-कहीं सप्तमी को भी पूजा करते हैं। तिथि के साथ-साथ ठंडा वार देखकर भी पूजा करते हैं। सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को ठंडा वार मानते हैं, मंगलवार, शनिवार, रविवार को कड़ा दिन माना जाता है इसलिये इस दिन पूजा नहीं करते हैं। इस दिन पंथवारी माता की भी पूजा की जाती है। शीतला माता जी का मंदिर अधिकतर नीम या पीपल के पेड़ के नीचे होता है। अत: शीतलामाता की पूजा करने के बाद पेड़ के नीचे पंथवारी माता की पूजा की जाती है।

पूजा करने के बाद बचाये हुए जल से अपने घर के आस-पास जहाँ भी होली जलायी जाती है वहाँ थोड़ा जल डालकर होली को ठंडा किया जाता है। घर में सभी सदस्यों को पूजा का जल माथे से लगाना चाहिये। तथा सर्वप्रथम ठंडी चीज खाने के बाद ही आवश्यक होने पर गर्म चीज लेनी चाहिये।

विशेष-

घर में यदि किसी सदस्य को माता निकली हुई हो तो शीतला माता की पूजा नहीं करनी चाहिये। रोगी की माता ढलने पर माता जी की पूजा करके दही चावल या बताशा भी चढ़ाया जा सकता है।

जो लड़कियाँ या जिनके घर सोलह दिन गणगौर की पूजा की जाती है वो इस दिन 'जंवारे का कुंड़ा' बोती हैं।

कहानी- १

होली के बाद जब शीतलाष्टमी आई, सब लोग कहने लगे माता आई, माता आई । किसी ने सीरा, (हलुआ) बनाया, किसी ने पूड़ियाँ बनाई और माता को गर्म-गर्म भोग लगाया, जिससे माता के अंग में आग सी लग गई। तब माता दौड़ती-दौड़ती कुम्हार के घर गईं और कुम्हार से बोली मेरे अंग में बहुत जलन हो रही है मुझे ठंडी मिट्टी लगा दो, तथा तुम्हारे घर में ठंडा-ठंडा खाने को होवे तो मुझे खाने को दो। कुम्हार ने रात की रोटी माता को खाने को दी जिससे माता ठंडी हो गईं। और बोलीं कि पूरी नगरी में आग लगेगी और तुम्हारा पूरा घर सोने का हो जायेगा। तब कुम्हार ने कहा सब लोग मुझे मारेंगे। माता बोलीं सबको मेरे पास भेज देना। इसके बाद पूरी नगरी में आग लग गई और कुम्हार कर घर सोने का हो गया। यह देख सब लोग कहने लगे कि कुम्हार ने क्या किया है कि पूरी नगरी जल गई परंतु कुम्हार का घर सोने का हो गया। कुम्हार बोला मैंने कुछ नहीं किया, मैंने शीतला माता को ठंडी किया, आप सब लोगों ने उन्हें गरम-गरम भोजन दिया जिससे माता का अंग जल गया। इसी कारण पूरी नगरी जल गई है।

लोगों ने पूछा माता कहाँ हैं? कुम्हार ने कहा नीम के पेड़ के नीचे ठंडी छाया में बैठी हैं? सब लोगों ने माता के पास जाकर विनती की। तब माता बोलीं आप लोगों ने मुझे गर्म-गर्म जिमाया, जिससे मेरी जीभ में छाले पड़ गये, कुम्हार ने मुझे ठंडा जिमाया जिससे मैं ठंडी हो गई और इसलिये उसका घर सोने का हो गया। सब लोगों ने माता से पूछा कि अब हम क्या करें? तब माता बोली होली के बाद अष्टमी को शीतला माता की पूजा करो और ठंडा भोग लगाओ। फिर बारह मास बाद जब शीतला अष्टमी आई तो गाँव के राजा ने पूरी नगरी में ढ़िंढ़ोरा पिटवाया कि होली के बाद अष्टमी को माता की पूजा करके ठंडी रसोई का भोग लगाना। सब लोगों ने वैसा ही किया। उससे माता प्रसन्न हुई और पूरी नगरी में आनन्द हो गया। सब लोग राजी खुशी रहने लगे।

अन्त में कहें–

'खोटी की खरी अधूरी की पूरी।'

कहानी- २

चैत्र का महीना आया। शीतलामाता एक बुढ़िया का रूप धारण करके नगर की फेरी करने को निकली। पूरी नगरी में कहीं भी ठंडी रसोई नहीं मिली। जहाँ भी जायें वहाँ गर्म भोजन बना था। एक कुम्हार के यहाँ गईं। वहाँ चौके में जाकर देखा तो हाँड़ी में राब और रोटियाँ बनाई हुई थीं। कुम्हारिणी सुबह-सुबह ही काम पर जाती थी, इसलिये रात में रसोई बनाकर रख देती थी। माता ने खूब भर पेट राव और

रोटी का भोग लगाया और आराम करने लगी। फिर कुम्हारिणी से बोली मेरे सिर की जुएँ देख दे।

कुम्हारिणी जुएँ देखने लगी। उसने देखा कि इसके सिर में पीछे भी एक आँख है। कुम्हारिणी डरी। तब माता बोली डरो मत, मैं शीतला माता हूँ। होली के आठवें दिन पूरे गाँव में आग लग जायेगी। केवल तुम्हारा घर बचेगा। इतना कहकर माता जी अपनी जगह चली गयीं।

माता जी के बतायेनुसार पूरे गाँव में आग लग गई केवल एक कुम्हारिणी का घर बच गया। राजा ने पूछा तुम्हारा घर कैसे बचा? तब कुम्हारिणी ने उत्तर दिया माता जी नगर में फेरी देने आई थीं। सब घर में गरम रसोई थी केवल मेरे घर में ठंडी रसोई थी। मेरे चौके में उन्होंने ठंडी रसोई जीमी और जाते समय बोली होली के आठवें दिन जो ठंडा बनायेगा, मेरी पूजा करेगा, मुझे ठंडी करेगा, उसके घरमें मैं ठंडी नजर से रहूँगी।

राजा जी ने पूरे गाँव में ढ़िंढ़ोरा पिटवाया कि होली के आठवें दिन गाँव के सब लोग ठंडा बनायें, माताजी की पूजा करें और ठंडा ही भोजन करें। उस दिन से नगर के लोग अष्टमी को माताजी की पूजा करने लगे और ठंडा भोग लगाकर ठंडा ही जीमने भी लगे। अन्त में कहें–

'खोटी की खरी अधूरी की पूरी।'

पीपल पथवारी माता की कहानी

एक सास बहू थी। सास ने कहा जा बहू दूध दही बेच आ। बहू चली गई। रास्ते में स्त्रियाँ पीपल पंथवारी सींच रही थीं। बहू ने पूछा तुम क्या कर रही हो। स्त्रियों ने कहा पीपल पंथवारी सींच रहे हैं। बहू ने पूछा इससे क्या होगा? स्त्रियाँ बोलीं इससे अन्न होगा, धन होगा, पुत्र होगा, और परदेश गया पति वापस आयेगा। बहू ने कहा तब तो मैं भी सींचूँगी। उसने दूध, दही बेचना छोड़ दिया, रोज दूध दही लेकर जाती और पीपल पंथवारी सींचती। बहुत दिन बाद सास ने बहू से कहा बहू दूध दही के पैसे ला। बहू ने कहा कल लाऊँगी। दूसरे दिन दूध, दही लेकर गई और पीपल पंथवारी सींचकर बोली मेरी सास ने पैसे मंगाये हैं। पीपल पंथवारी ने कहा मेरे पास पैसे कहाँ है? पत्ते और पत्थर हैं,यह ले जा। बहू पत्ते और पत्थर उठाकर ले गई तथा ओबरी के पीछे रखकर सो गई। सास ने कहा पैसे लाई हो, तो बहू ने कहा हाँ लाई हूँ, ओबरी के पीछे पड़े हैं। सास ने जाकर देखा तो हीरे-पन्ने जगमगा रहे थे। यह धन कहाँ से ले आयी। किसी का चुराकर तो नहीं लाई। तब बहू ने सारी बात बताई।

सास ने कहा मैं भी पीपल पंथवारी सीचूँगी। तू मुझे दूध, दही बेचने को कह। बहू ने कहा कहीं बहू भी सास को काम करने को कहती है। सास ने कहा इसमें तुम्हारा क्या लगता है। बहू ने कहा अच्छा जाओ दूध, दही बेचकर आओ सास गई। दूध दही तो गाँव में बेच दिया और हाँड़ियों का धोवन पीपल पंथवारी में डाल दिया। रोजाना इसी प्रकार करती। कई दिन हो गये सास ने कहा बहू आज तू मुझसे दूध दही के पैसे लाने को कह। बहू ने कहा कहीं बहू भी पैसे माँगती है। सास ने कहा इसमें तुम्हारा क्या लगता है। तब बहू ने कहा– अच्छा जाओ दूध दही के पैसे लाओ।

दूसरे दिन सास गई, पीपल पंथवारी से बोली मेरी बहू ने पैसे मँगाये हैं। पीपल पंथवारी बोली, कहीं बहू भी पैसे मांगती है? उसने कहा हाँ मांगती है। तब पीपल पंथवारी बोली हमारे पास पैसे कहाँ हैं ये पत्ते और पत्थर हैं चाहो तो ले जाओ। सास ने पोटली बाँधी ओर लाकर ओबरी में डाल दी। और बहू से कहा अब पैसे के लिए पूछ तो बहू ने पूछ लिया। सास ने कहा ओबरी में पड़े हैं। बहू ने जाकर देखा तो वहाँ साँप-बिच्छू, कीड़े-मकोड़े आदि थे। बहू ने कहा सासू जी यह क्या? सास ने आकर देखा तो बहुत दुख हुआ। पीपल पंथवारी के पास गई और बोली तुमने दगा किया है। उन्होंने कहा दगा तो तुमने किया। दूध दही तो बेच देती थी और धोवन का पानी हमारे ऊपर डाल देती थी। परन्तु तुम्हारी बहू ने सींचा दूध-दही से । उसने सींचा धर्म से तुमने सींचा पाप से। इस पर सास ने हाथ जोड़ लिये और कहा माता अपनी माया समेटो, तब पीपल पंथवारी माता ने अपनी माया समेट ली और सास बहू आनन्द से रहने लगी।

खरी की खोटी अधूरी की पूरी

वासंतिक नवरात्र

वासंतिक नवरात्र चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा (एकम) से लेकर रामनवमी तक मनाया जाता है। प्रतिपदा से हिन्दू नववर्ष (नया सम्वत्) भी प्रारम्भ होता है। नवरात्र का व्रत शक्ति दायक है। इससे संकट दूर होता है घर में सुख समृद्धि बढ़ती है। इन दिनों देवी दुर्गा और कन्या पूजन का विशेष महत्व होता है। दुर्गा सप्तशती के पाठ का भी विधान है। नवमी को कुमारी पूजन के दिन सामर्थ्य के अनुसार नौ, सात, पाँच, तीन या एक कन्या को देवी मानकर उसकी पूजा और भोजन कराना तथा दक्षिणा देकर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिये। नवरात्र के प्रथम दिन जौ (ज्वारे) बोने की क्रिया की जाती है। पाटे पर लाल वस्त्र बिछाकर दुर्गा जी की प्रतिमा या पोस्टर रखकर नवदुर्गा की पूजा अर्चना की जाती है। इसी पूजा में घट स्थापित करने का भी विधान है। इसमें तांबे या मिट्टी के कलश में जल भर कर-उस पर मोली बांधकर चारों ओर आम के पत्ते रखकर बीच में नारियल रखा जाता है। और नौ दिन तक पूजा अर्चना करी जाती है। रोली, अक्षत, सिंदूर, कपूर, धूप, दीप, लाल पुष्प, पान, सुपारी, नैवेद्य, लौंग, इलायची, फल आदि से पूजन करें और भोग लगायें। इस पूजा में नौ दिन तक अखंड दीपक जलाने का भी विधान है। नवें दिन पाठ के बाद हवन भी किया जाता है तथा नवें दिन पहले दिन बोए गए ज्वारे का विसर्जित किया जाता है। नवरात्र में अष्टमी के दिन कुलदेवी की भी पूजा की जाती है।

गणगौर

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एकम से १६ दिन की गणगौर की पूजा की जाती है। यह व्रत कुँवारी लड़कियाँ अच्छे वर तथा सुहागिन स्त्रियाँ अपने सौभाग्य के लिये करती हैं। जिनके यहाँ १६ दिन की गणगौर मंडती हैं, वे शीतलाष्टमी के दिन कुंडे में ज्वारे बोती हैं।

गणगौर की पूजा का सामान-

होलिका की राख की १६ पिंडोली, १६ मिट्टी की पिंडोली, गेहूँ जवारा बोने के लिये कुंडा, रोली, चावल, मेंहदी, काजल, दूब, फूल, दीपक, जल का कलश।

गणगौर की बड़ी पूजा के लिये-

गणगौर का कुंडा, ज्वारा का कुँड़ा, पाटा, जल का लोटा, नीम की दातून, गणगौर का वस्त्र, बथुये की पिंडोली, रोली, चावल, मोली, मेंहदी, काजल, हल्दी, फूल, दीपक, माचिस, भोग के लिए आटे का सीरा, पूड़ी, आटे का मीठा फीका फल, रुपया, ब्लाउजपीस।

गणगौर का सिंजारा-

चैत्र शुक्ल द्वितीया को गणगौर का सिंजारा आता है। इस दिन सुबह कुँवारी लड़कियों और सुहागिन स्त्रियों को नहा धोकर मेंहदी मंडवाना और मंदिर जाना चाहिये। शादी शुदा बहन बेटियों को बुलाकर सबको मेंहदी मंडवाना तथा उनका मनपसंद भोजन जिमाना चाहिये। यथाशक्ति बहुओं, बेटियों को कपड़े, गहने, रुपया, मेवा, फल उपहार में देना चाहिये। परदेश वाली बेटियों, बहुओं को भी सामर्थ्य के अनुसार उपहार भेजना चाहिये।

सिंजारे की यह प्रथा परिवार में आपसी प्रेम संबंधों का परिचायक है।

गणगौर

चैत्र शुक्ला तृतीया को गणगौर आती है। इस दिन कुँवारी लड़कियाँ, सुहागिन स्त्रियाँ गणगौर की पूजा करती हैं। ओर एकासना व्रत करती हैं। कहा जाता है इसी दिन भगवान शंकर ने अपनी अर्धाङ्गिनी पार्वती को और पार्वती ने तमाम स्त्रियों को सौभाग्य का वरदान दिया था।

गणगौर पूजा की विधि- यह पूजा कुमारी कन्यायें सोलह दिन तक सुबह दूब व फूल से करती हैं। सर्वप्रथम गणगौर वाले दिन लड़कियों और स्त्रियों को अच्छी तरह नहा-धोकर, पूरी तरह सोलह श्रृंगार करके गणगौर की पूजा करनी चाहिये।

गणगौर की पूजा दीवाल पर ईसर-गौर मांडकर या पाटे पर मिट्टी की ईसर गौर बनाकर करते हैं। जो लोग जवारे बोते हैं वे जवारे को भी पाटे पर विराजमान करते हैं। गणगौर की पूजा के पहले जवारे की पूजा की जाती है। फिर दीवाल पर कुमकुम, काजल और मेंहदी की टिक्की लगाते हैं। कुँवारी लड़कियाँ १६ और सुहागिन स्त्रियाँ ८ टिक्की लगाती हैं। फिर गणगौर की पूजा करते हैं। हाथ में दूब और जवारा लेकर 'गौर गौर गोमती' या 'गोर ए गणगौर माता' बोल कर पूजा करते हैं।

बाद में विधिपूर्वक रोली चावल, फूल चढ़ाकर और भोग लगाकर पूजा की जाती है।

फिर शाम को गणगौर को मीठा खिलाकर चार बार जल पिलाकर उनकी विदाई की जाती है। विदाई से पहले इसर-गौर के आगे अपने पति का नाम लेकर उनकी दीर्घायु की कामना करते हैं। सुविधा के अनुसार संध्या समय उनका नदी, तालाब में विसर्जन कर दिया जाता है।

गीत - १

गोर एक गणगोर माता खोल किवाड़ी, बाहेर ऊबी थारी पूजन वाली।
पूजोये पूजास्यां बायाँ काँई काँई माँगो।
जल जामी बाबुल माँगू, राता देई माता। कालो गोरा काको माँगू, काजल वाली काकी, बड़े घुमालो मामो माँगू, मादलवाली मामी, कान्ह कँवरसो वीरो मांगू, राई सी भौजाई चुड़लो वाली बेन माँगू, ऊँट चढ़ो बहनोई। इतरो तो देवो गवरल ये म्हे थाने पूजा आज, । खांडयो सो पीपल झरनो हे, नीचे
गवरल जाय। ईसर पारवती ने विनती है
मांगूली लाख पचास। भल माँगू पीहर सासरो
हे भल मांगू सो परिवार, भल माँगू
परज्योड़ो पातालो ये सगला में सिरदार।

गीत - २

गौर गौर गोमती, ईसर पूजे पार्वती।
पार्वती का आला गीला, गौर का सोना टीका।।
टीका दे टमका दे रानी, व्रत करयो गौरा दे रानी।
करता-करता आस आयो, मास आयो।
खैरे खाण्डे लाडू ल्यायो, लाडू ले वीरा ने दियो, वीरा मने पाल दी, पाल कौ मैं बरत करयो। सन मन सोला सात कचौला, ईसर गौरा दोन्यू जोड़ा, जोड़ ज्वारां गेहूँ ग्यारह, रानी पूजे राजा ने। मैं म्हाके सवाग ने, रानी को राज बढ़तो जाय, म्हाका सवाग बढ़तो जाय। कीड़ी कीड़ी कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है। जात है गुजरात है गुजरात्या रो पाणी, दे दे थाम्बा ताणी। ताणी में सिंघाड़ा, बाड़ी में भी जोड़ा

म्हारो बाई एकल्यो, खेमल्यो, लाडू ल्यो, पेड़ा ल्यो, सेब ल्यो, सिंघाड़ा ल्यो, झर झरती जलेबी ल्यो, हरी-हरी दूब ल्यो, गणगौर पूजल्यो।

कहानी- १

एक दिन शंकर-पार्वती जी पृथ्वी पर भ्रमण करने निकले, साथ में नन्दी भी था । शंकर जी नन्दी पर बैठ गये और जाने लगे तो लोग हँस-हँसकर कहने लगे आदमी तो ऊपर बैठा है बिचारी औरत पैदल चल रही है। यह सुनकर शंकर पैदल चलने लगे और पार्वती जी को नन्दी पर बैठा दिया। आगे चले तो लोग कहने लगे देखो पति को पैदल चला रही है और खुद आराम से नन्दी पर बैठी है। थोड़े आगे गये तो शंकर पार्वती जी दोनों नन्दी पर बैठ गये। तब लोग कहने लगे कैसे आदमी औरत हैं बिचारे नन्दी के प्राण लेंगे क्या यह सुनकर दोनों ही नीचे उतर गये और पैदल चलने लगे। आगे चले तो लोग हंसने लगे कैसे बेवकूफ औरत आदमी हैं जब साथ में सवारी है तो भी पैदल चल रहे हैं। तब शंकर जी ने पार्वती जी से कहा–इस संसार में लोग चढ़ने पर भी हँसते हैं और उतरने पर भी हँसते हैं। जैसी शंकर जी ने पार्वती को सैर कराई वैसे हमें भी कराना और कहने-सुनने वाले दोनों को कराना।

''खेटी की खरी अधूरी की पूरी''

कहानी- २

चैत्र शुक्ला तृतीया को शिव पार्वती जी घूमने निकले। घूमते-घूमते एक गाँव में पहुँचे तथा वृक्ष के नीचे आराम करने लगे। गाँव के लोगों को पता चला कि शिव पार्वती आये हैं तब धनी स्त्रियाँ उनके पूजनार्थ नाना प्रकार के भोजन बनाने में लग गयी। इस कारण उन स्त्रियों को काफी देर हो गई ।

उधर गरीब घर की स्त्रियों जैसी बैठी थी वैसे ही थाली में रोली, चावल, हल्दी, जल लेकर शिव पार्वती की पूजा करने चल दी। उन स्त्रियों ने श्रद्धा से पूजा की, जिससे पार्वती जी ने खुश होकर सुहाग रूपी हल्दी उन सब पर छिड़क दी। पार्वती जी से आशीर्वाद लेकर सब अपने घर चल दी।

फिर धनी कुल की स्त्रियाँ सोलह श्रृंगार करके नाना प्रकार के भोजन सोने की थाली में सजाकर पूजा करने आईं। सब शंकर जी ने कहा पार्वती जी आपने तो सारा सुहाग-प्रसाद साधारण स्त्रियों में बाँट दिया, अब इन लोगों को क्या दोगी? पार्वती जी ने कहा, आप इसकी चिन्ता न करें। उन्हें केवल ऊपरी पदार्थों से निर्मित रस दिया है, इसलिए उनका सुहाग धोती से रहेगा। परन्तु इन लोगों को मैं अपनी अँगुली चीर कर रक्त सुहाग रस दूँगी, जिससे ये मेरे समान ही सौभाग्यशाली बन जायेंगी। तब देवी पार्वती ने अपनी अँगुली चीर कर उस रक्त को उनके ऊपर छिड़क दिया और कहा तुम लोग माया-मोह से रहित होकर तन-मन धन से पति की सेवा करो। तुम्हें अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होगी। गंगा-यमुना की धारा की तरह तुम्हारा सौभाग्य अचल रहेगा।

भवानी का यह आशीर्वाद सुनकर उनको प्रणाम करके सब स्त्रियाँ अपने घर चल दीं। छिड़का हुआ रक्त जिसके ऊपर जैसा पड़ा उसने वैसा सौभाग्य प्राप्त किया।

खोटी की खरी, अधूरी की पूरी

कहानी- ३

राजा ने बोया जौ चना, माली ने बोई दूब। राजा का जौ चना बढ़ता गया, माली की दूब घटती गई। माली ने सोचा यह क्या बात हो गयी कि राजा का जौ चना बढ़ रहा है और मेरी दूब घट रही है।

एक दिन सुबह माली पता लगाने के लिये अपने बगीचे में छिपकर बैठ गया, देखें कि क्या बात है? सुबह होते ही थोड़ी देर में लड़कियाँ गीत गाती, हँसती खेलती गौरपूजा के लिये दूब तोड़ने बगीचे में आयीं और दूब तोड़ने लगीं। तब माली ने लड़कियों को पकड़कर किसी का लोटा छीन लिया, किसी का घाघरा छीन लिया, किसी का ओढ़ना उतार लिया और लड़कियों को बोला तुम लोग रोज-रोज मेरे बगीचे से दूब क्यों तोड़ ले जाती हो? मेरा बगीचा क्यों उजाड़ती हो? आज मेरी पकड़ में आयी हो। तब लड़कियाँ बोली भाई हमारी चीजें वापस दे दो, हमारे सोलह दिन की गणगौर है, हम पूजा के लिये दूब ले जाते हैं। सोलह दिन के बाद गणगौर विदा होंगी उस दिन हम तुम्हें भर-भर कर कुण्डारा सीरा-लापसी लाकर देंगे। अब तुम हम लोगों को छोड़ दो। माली राजी हो गया और सबके कपड़े वापस कर दिये। रोज की तरह लड़कियाँ दूब लेकर घर गयीं।

सोलह दिन पूरे हुए तब लड़कियाँ सीरा लापसी का कुण्डा भर कर माली को देकर आयीं। मालन ने सब चीजें कोठरी में रखकर बाहर से सांकल बंद कर दी। थोड़ी देर में माली का बेटा बाहर से आया और मालन को बोला-माँ, माँ, भूख लगी है जल्दी कुछ खाने को दो। मालन बोली बेटा आज तो गणगौर माता की कृपा से लड़कियाँ बहुत सीरा लापसी का कुण्डा भरकर दे गईं हैं। कोठरी में रखा है चाहे जितना खाओ।

वह कोठरी खोलने लगा कोठरी खुली नहीं। तब मालन ने आकर कोया में से काजल टिकी में से रोली, चावल चिटली अंगुली समें से मेंहदी निकालकर छींटा दिया और कोठरी का दरवाजा खुल गया। अंदर झांककर देखा तो दिखाई दिया कि सोने के झूले पर ईसर जी

विराजमान है। और गौरादे जी पाग सँवार रही हैं। चारो ओर हीरे-मोती झिलमिल कर रहे हैं। सब चीजों से भण्डार भरे हुए हैं। माली मालन यह दर्शन करके धन्य हो गये।

हे महाराज, ईसर गौरादे जी ने जैसी उन पर कृपा की वैसी सब पर करना।

खोटी की खरी, अधूरी की पूरी

कहानी-४

चैत्र का महिना आया। होली के बाद दूसरे दिन से जंवारा बोकर लड़कियाँ गौर पूजने लगीं। जब भौजाई के उद्यापन के लिये पार्वती जी पीहर जाने लगीं, तब महादेव जी बोले मैं भी आपके साथ चलूँगा और महादेव पार्वती नंदी को साथ लेकर चल पड़े।

रास्ते में एक गर्भिणी गाय मिली। वह तड़फड़ा कर रही थी। तब पार्वती जी ने महादेव जी से पूछा ''यह ऐसे क्यों कर रही है?'' महादेव जी ने उत्तर दिया पार्वजी आगे चलो, फिर देखेंगे। पार्वती जी बोलीं नहीं महाराज अभी बताओ, नहीं तो ओगे नहीं चलेंगे। तब महादेव जी बोले यह कष्टी है इसके बाल-बच्चा होने वाला है।

पार्वती जी बोलीं अगर बाल-बच्चा होने पर इतना कष्ट होता है तो मेरे गाँठ बाँध दो। महादेव जी बोले पार्वती आगे चलो दी हुई गाँठ फिर खुलेगी नहीं।

दूसरे गाँव में गये वहाँ घोड़ी कष्ट से तड़फ रही थी। पार्वती जी बोलीं यह ऐसे क्यों कर रही है? तब महादेव जी ने उत्तर दिया इसके भी बाल-बच्चा होने वाला है। पार्वती जी बोलीं अगर बाल-बच्चा होने पर इतना कष्ट होता है तो मेरी गाँठ बाँध दो। महादेव जी बोले आगे चलो दी हुई गाँठ फिर खुलेगी नहीं। फिर पछताओगी।

तीसरे गाँव में गये। उस राजा की रानी कष्ट में थी उसे भी बाल-बच्चा होने वाला था। गाँव बहुत बड़ा था पर सुनसान था। पार्वजी जी बोलीं महाराज यह गाँव इतना सुनसान क्यों है? महादेव जी बोले रानी को बच्चा होने वाला है जिससे बाजार बन्द है। पार्वती जी बोली बाल-बच्चा होने पर इतना कष्ट होता है तो मेरी गाँठ बाँध दो। महादेव जी ने कहा आगे चलो। तब पार्वती जी जिद्द करके बैठ गयीं। महाराज गाँठ बाँधो तो चलूँगी। शिवजी ने पार्वती जी के जिद्द देखकर गाँठ बाँध दी। दोनों जने ससुराल पहुँच गये। १५-२० दिन रहे। खूब मान-सम्मान हुआ। कोई बोले बहन आयी हैं, कोई बोले बुआ आयीं है।

महादेव जी बोले अब हम घर जायेंगे, बहुत दिन हो गये हैं। रसोई बनी। महादेव जी ने भाँग के नशे में सारी रसोई अकेले ही जीम ली। पार्वती जी, बथुआ की पिण्डी और १६ फल एक लोटा पानी पीकर रवाना हो गईं।

आगे रास्ते में विश्राम के लिये दोनों एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। महादेव जी बोले ''पार्वती जी आप क्या जीमे।'' महाराज आप जो जीमे वही मैं भी जीमी। पार्वजी जी वृक्ष के नीचे सो गई। महादेव जी ने पार्वती जी के पेट की ढकनी खोलकर देखा १६ फल ४ बथुआ की पिण्डी जिमी थी और एक लोटा जल पेट में डग-डग कर रहा था। पार्वती जी उठीं तब महादेव जी बोले मैं बाताऊँ आप क्या जीमी हैं। १६ फल और ४ पिण्डी। पार्वती जी बोली आज तो आपने मेरी ढकनी खोली है परन्तु आगे से कोई भी स्त्रिी की ढकनी नहीं खुलनी चाहिये। किसी का पीहर गरीब रहता है। किसी का पीहर अमीर रहता है। देखो ससुराल की बात पीहर नहीं कहना और पीहर की ससुराल में नहीं कहना चाहिये। यदि आपने मेरी बात नहीं मानी तो मैं चिड़िया बनकर उड़ जाउँगी। यह सुनकर महादेव जी डर गये, उन्होंने सोचा कि पहले की सती के वियोग में मैंने संसार का विनाश किया अब अगर पार्वती जी छोड़कर चली गयीं तो मेरा क्या होगा। तब भगवान ने पार्वती जी की बात मान ली और उस दिन से सबके पेट की ढकनी खुलनी बंद हो गयी।

महादेव जी आगे रवाना हुए। रास्ते में राजा के रानी को बेटा हुआ था जिससे लोग बधाइयाँ बाँट रहे थे। बाजे बज रहे थे, स्त्रियाँ गीत गा रहीं थी। रानी जलवा पूजने जा रही थी यह देखकर पार्वती बोली महाराज मेरी गाँठ खोलो मुझे भी ऐसा तो बच्चा चाहिये। महादेव जी ने कहा दी हुई गाँठ अब नहीं खुलेगी।

वे दोनों दूसरे गाँव में गये। घोड़ी के बच्चा हुआ था। वह घोड़ी के आगे-पीछे फिर रहा था। घर का मालिक आनन्द मना रहा था। पार्वती जी बोली महाराज ऐसा बच्चा मुझे भी चाहिये महादेव जी ने कहा दी हुई गाँठ नहीं खुलेगी।

आगे गये तो गाय के बछड़ा हुआ था। वह दौड़-दौड़ कर नाच रहा था। गाय बछड़े को चाट-चाट कर लाड़कर रही थी। पार्वती जी बोली ऐसा बेटा मुझे भी चाहिय महादेव जी ने वही उत्तर दिया कि दी हुई गाँठ नहीं खुलेगी।

महादेव जी तपस्या करने चले गये। एक दिन पार्वती जी उदास बैठी थीं। बैठे-बैठे उन्होंने अपने शरीर का मैल उतारा और उस मैल का पुतला बनाया और उसे जीवन दान देकर दरवाजे पर बैठा दिया और कहा कि मैं नहाने जा रही हूँ किसी को अन्दर मत आने देना।

महादेव जी जब तपस्या करके आये तब इस बालक ने कहा कि महाराज अन्दर नहीं जाना मेरी माँ नहा रही है। महादेव जी बोले ''कौन माँ'' कहकर पुतला को त्रिशूल मारा तो उस पुतले की गर्दन उड़ गई और वे अन्दर चले गये। पार्वती ने पूछा कि महाराज आपको किसी ने रोका नहीं? महादेव जी बोले एक जिद्दी बालक रोक रहा था। मैं गुस्से में उसकी गर्दन उतारकर अन्दर आया हूँ। पार्वती जी बोली वह तो मेरा बेटा है उसको जीवित करो। उसके बिना मैं रह नहीं सकती।

महादेव जी घबरा गये और अपने गणों को आज्ञा दी जो भी माँ अपने बच्चे की ओर पीठ करके-सोई होगी उस बच्चे की गर्दन काटकर ले आओ।

महादेव जी के गण चारो दिशाओं में गये परंतु सब माताएँ अपने बच्चों को छाती से लगाकर सोई थीं। एक हथिनी पीठ करके चर रही थी। गणों ने उसकी गर्दन उतार कर बच्चे को लाकर लगा दी और अमृत का छिंटा दिया। कुँवर जिन्दा हो गया। पार्वती जी बोलीं महाराज ये क्या? दूंड-दूंडालो, सूंड संगलो मोटी सूँड़ मोटे कान आपने ऐसा मुँह ढूँढा। इसको तो कोई नहीं चाहेगा। लेकिन महादेव जी ने पार्वती जी से कहा-आपके बेटे की पूजा सब कोई सबसे पहले करेंगे। फिर दूसरी पूजा करेंगे। यह वरदान सुनकर पार्वती जी खुश हुईं। तभी से शादी-विवाह और सभी शुभ कार्यों में पहले गणेश जी की पूजा की जाती है।

'खोटी की खरी, अधूरी की पूरी'

नोट- गणगौर की पूजा तथा कहानी सुनने के बाद सूर्य भगवान को अर्घ्य दिया जाता है। और यह कहा जाता है–

'अलल-खलल गंगा बेहवे, यो पाणी कठे जाशी। आदो पाणी अल्या-गल्या में आदो ईसर न्हाशा। ईसर जी तो न्याया धोया गवरादे ने लाश्याँ। गवरादेने बेटो जायो चाँद बधायी लाश्याँ । चाँद केरा सूरज ने, आट केरा डोराजी । सरल सरल सीवु म्हारा भतीजारा नागाजी । नागा-नागा काई फिरो थाने ओर शिवाय देबू बागाजी । भुवारे भरोसे रहे गया नागाजी'।

वैशाख मास (कृष्ण पक्ष)

बारह महीने कृष्ण चतुर्थी को चौथ का व्रत आता है। परन्तु चार चौथ के व्रत का विशेष महत्त्व है। कई लोग बारह मास ही चौथ का व्रत करते हैं। कुछ लोग केवल प्रमुख चार-चौथ का ही व्रत करते हैं। चौथ का व्रत वैशाख या भाद्रपद की चौथ से ही शुरू करना चाहिये। दिन भर व्रत करने के बाद रात में चौथ माता और गणेश जी का पूजन करनी चाहिये तथा चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन कर लेना चाहिए।

निम्नलिखित ये चार मुख्य बड़ी चौथ हैं।

१. वैशाखी कृष्णचौथ

२. भाद्र पद कृष्ण चौथ

३. कार्तिक कृष्ण चौथ (करवा चौथ)

४. माघ कृष्ण चौथ (माही चौथ या तिलकुट चौथ)

वैशाख मास की चौथ

पूजा का सामान–

कुंकुम, सिन्दूर, हल्दी, मेंहदी, गुड़, घी, दिया, पुष्प, कपूर, गणपति जी के लिये लड्डू या गुड़ का चूरमा

इस सभी पूजन सामग्रियों से गणेशजी का विधिवत पूजन करते हैं।

वैशाख के चौथ की कहानी–

एक बार की बात है एक गाँव में एक सेठ रहता था। वह बहुत सम्पन्न था। उसके पुत्र और पुत्र वधू भी थी। सेठानी भी सभी को चाहती थी। सभी प्रेम से रहते थे। जब बहू अपना कामकाज करके बाहर जाती तो उसके आस-पड़ोस की स्त्रियाँ उससे पूछती कि– आज भोजन में क्या बनाया था? क्या खाया तूने? तब वह प्राय: यही जवाब देती कि बासी भोजन किया है। एक दिन यह बात सेठ ने सुनी तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना सब कुछ है, बहू को कोई कमी नहीं है, वह अच्छा भोजन करती है फिर ऐसा क्यों कहती है? वह चुप रहा। थोड़े दिन बाद यही बात उसके पति ने सुनी तो उसे बहुत क्रोध आया।

रात्रि में उसने अपनी पत्नी को बहुत फटकारा और उसका कारण पूछा । तब उसकी पत्नी ने कहा- मैंने ठीक ही कहा है। यह सब आपके दादा, परदादा की मेहनत की कमाई है जिसे हम खा रहे हैं तो यह बासी ही हुई न। इस बात का गूढ़ रहस्य उसके पति की समझ में आ गया और उसने परदेश जाकर कार्य करने का मन बना लिया। अगले दिन उसने अपने माता-पिता से बात की तो उन्होंने कहा-यह सब तेरा है। हमारे यहाँ सभी कुछ है। फिर क्या आवश्यकता है कि तू कमाने परदेश जाए? उसके समझाने पर माता-पिता को उसकी बात माननी पड़ी। वह परदेश निकला और एक सेठ का सारा कार्य करने लगा। धीरे-धीरे समय व्यतीत होने लगा। सासू माँ ने अपनी बहू से कहा–बहू ! जब भी तू चूल्हे की अग्नि को बुझाए तो उस जलते हुए दीए को मत बुझाना और दीए को अगर बुझाना हो तो चूल्हे की अग्नि को मत बुझाना। बहू ने कहा ठीक है।

एक दिन बहू कार्य कर रही थी। उसे ध्यान नहीं रहा और अचानक चूल्हे और दीए दोनों की अग्नि बुझ गई। वह सोचने लगी अब क्या होगा? तब उसने सोचा बाहर से अग्नि लाकर जला देती हूँ। पड़ोस में पहुँची तो वहाँ पर स्त्रियाँ माता की पूजा अर्चना कर रही थीं। तब उसने उसके विषय में पूछा कि किसकी पूजा कर रही है और क्यों? तब उसकी पड़ोस की एक स्त्री ने कहा–हम सभी चौथ माता के व्रत को रखकर, माता का व्रत करके उनकी पूजा कर रही हैं। इस व्रत पूजन से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है, जो बिछुड़ गया हो वह मिल जाता है। वह बहू बोली– मैं भी यह व्रत करना चाहती हूँ लेकिन मेरी सास मुझे बाहर कहीं आने-जाने नहीं देती है। फिर यह कैसे ज्ञात होगा कि चौथ कब है? तब उसकी पड़ोसन ने कहा कि– एक कार्य करना, घर पर जाकर प्रतिदिन किसी सुरक्षित स्थान पर एक गेहूँ का अथवा चावल का दाना रखती रहना। जब तीस दिन में तीस दाने हो जाएँ तब समझ जाना आज चौथ है और व्रत कर लेना। उसने उस बहू को व्रत करने की विधि अच्छी तरह से समझा दी। बहू ने वैसा ही किया और समय पर उसने व्रत किया और बहुत समय तक उसने व्रत किया लेकिन कुछ नहीं हुआ। तब चौथ माता ने भी सोचा कि यदि मैंने इसकी बात नहीं मानी और इसकी इच्छा पूरी नहीं की तो सभी का मेरे ऊपर से विश्वास उठ जायेगा। यह सोच माता ने कुछ करने का मन बनाया।

उस स्त्री का पति अपने व्यापार में लगा हुआ था। एक रात्रि माता चौथ ने उसे स्वप्न में कहा कि– अब तुझे यहाँ पर बारह वर्ष हो चुके हैं। जा, अपने घर की सुध ले। वहां तेरी पत्नी और माता-पिता तेरी बाट जोह रहे हैं। तो वह बोला–मेरा यहाँ सारा काम फैला पड़ा है। कुछ कार्य अटका हुआ है उसका क्या होगा? माता ने कहा– सुन, विनायकजी का स्मरण करके दिया जला उससे तेरा कार्य पूर्ण हो जाएगा अगले दिन से उसने ऐसा ही किया। एक-दो दिन में ही उसके सभी कार्य पूरे हो गए। फिर उसने घर चलने की तैयारी कर ली और प्रसन्नतापूर्वक चल दिया। अभी कुछ दूरी पर ही पहुँचा था कि मार्ग में उसने देखा कि एक सर्प जा रहा है । तो उसने उस सर्प को ताली बजाकर सिसकार दिया। इससे सर्प क्रोधित हो गया और बोला कि–मैं अपने जीवन में सौ वर्ष पूर्ण कर चुका था और मैं मुक्ति के लिए जा रहा था लेकिन तुमने मुझे सिसकार के मेरे मुक्ति के कार्य में बाधा डाल दी। अब मैं तुझे नहीं छोड़ँगा।

वह डर गया और बोला–कृपया मुझे माफ करना। मैं बारह वर्षों के बाद अपने माता-पिता एवं पत्नी से मिलने जा रहा हूँ। मैं उनसे मिल लूँ बाद में मुझे डस लेना। सर्प ने कहा– तुम वहाँ पर जाकर अपने पलंग पर सो जाओगे और में पलंग पर नहीं चढ़ पाऊँगा फिर कैसे तुम्हें डसूँगा? तब वह बोला– जब सोऊँगा तब अपनी पत्नी की चोटी को नीचे लटका दूँगा उसके सहारे ऊपर आ जाना और मुझे डस लेना।

सर्प ने कहा–ठीक है। तब वह व्यक्ति अपने घर की ओर चला।

घर पर सभी उसको वापस आया देखकर बहुत प्रसन्न हुए लेकिन वह कुछ परेशान था। उसके मन की बात भाँपकर उसकी पत्नी ने सब कुछ पता कर लिया। वह बोली–चिन्ता मत करिए सब ठीक होगा। वह चतुर थी। जब रात में सब सो गए तो उसने अपने घर की सीढ़ियों पर खाने-पीने का सामान और दूध रख दिया। रात्रि में सर्प आया, दूध पिया और भोजन को खाता हुआ खुश होकर आगे बढ़ा। लेकिन उसे तो डसना था। अत: वह उस कमरे की ओर बढ़ा। इस प्रकार सर्प के आने पर विनायक जी ने सोचा इनकी रक्षा करनी चाहिए और चौथ माता ने भी रक्षा की सोची। तब उन्होंने सर्प के डसने से पहले ही उसे समाप्त कर दिया तो तो खून ही खून फैल गया।

सुबह जब यह सब माता-पिता ने देखा तो दंग रह गए। बेटे के बताने पर पता चला। बेटे ने कहा कि–मेरे जाने के पश्चात् किसी ने कोई पुण्य कर्म दानादि नहीं किया। तब माँ ने कहा कि– हाँ मैंने दान-पुण्य किया है। मैं बहु को चार समय भोजन करवाती थी। बहु ने कहा–मैंने किया है पुण्य कर्म। मैं चारों समय के खाने में से एक समय का खाना पानी वाली को, दूसरा गाय के बछड़े को और तीसरा खाना घर के पीछे गाड़ती थी और हर माह चौथ का व्रत करती थी। अपना चौथा भोजन मैं शाम को चन्द्रमा को अर्घ्य देकर फिर खाती थी। सास ने सभी से सत्यता पता करने के लिए पूछा–तब उसे घर के पीछे खोदने पर रोटी के स्थान पर सोने की रोटियाँ मिलीं। बछड़े ने भी आशीर्वाद स्वरूप हामी भरा। तब सास को चौथे के व्रत महत्व समझ में आया। उसने भी व्रत व उद्यापन करने का विचार रखा। यह सुन वह बहुत प्रसन्न हुई और दोनों ने मिलकर चौथ का व्रत व उद्यापन किया।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी

वैशाख शुक्ल पक्ष (अक्षय तृतीया)

वैशाख शुक्ल पक्ष में जो तृतीया आती है उसे 'आखा' तीज भी कहते हैं। कहते हैं यह दिन बिना पूछे शुभ मूहूर्त वाला दिन है। इसलिए कोई भी शुभ कार्य बिना मुहूर्त पूछे किया जा सकता है। इस दिन कोई भी चीज दान करने से उसका अक्षय फल प्राप्त होता है।

इस दिन गुप्त दान करने का भी विशेष महात्म्य है ऐसी मान्यता है कि इस दिन किये गये स्नान जप तप दान, श्राद्ध तर्पण आदि सभी कार्यों का फल अक्षय होता है। इसी से इसका नाम 'अक्षय' हुआ है।

इस दिन तीन प्रमुख अवतार नर-नारायण परशुराम और हयग्रीव हुए हैं। इसलिये इन अवतारों की जयंती भी मनायी जाती है।

कुछ लोगों के यहाँ इस दिन खीचड़ा बनाने की भी प्रथा है।

इस दिन मिट्टी की नई मटकी में जल भरकर दान के रूप में मंदिर में दी जाती हे तथा घर में भी भरी जाती है।

महेश नवमी

ज्येष्ठ शुक्ला नवमी को महेश नवमी आती है। इस दिन भगवान महेश की कृपा से माहेश्वरी समाज की 'उत्पत्ति' हुई थी। इसलिये समाज के लोग महेश नवमी को उत्पत्ति दिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन लोग शिव मंदिर में पूजन अर्चना तथा रुद्राभिषेक आदि करते हैं। इस दिन समाज द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा तथा भोज का आयोजन भी किया जाता है। माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति के बारे में यह कथा प्रचलित है।

खंडेला नगर में सूर्यवंशी राजओं में चौहान जाति के राजा खड़गलसेखण राज्य करते थे। एक समय राजा ने भू-देव जगतगुरु ब्राह्मणों को बड़े आदर पूर्वक अपने मन्दिर में भोजन कराकर उन्हें द्रव्य आदि अर्पण किये । तब ब्राह्मणों ने कहा–हे राजन् ! तेरा मन वांछित वरदान सिद्ध हो जाय। इसे सुन राजा बोला–हे महाराज, मुझे पुत्र की वांछना है । तब ब्राह्मणों ने कहा–हे राजन् ! तू शिव शक्ति की सेवा कर, तुझे चक्रवर्ती पुत्र होगा। वह बड़ा बलशाली और बुद्धिमान होगा। लेकिन उसे सोलह साल तक उत्तर दिशा में मत जाने देना और न ही सूर्य कुण्ड में स्नान करने देना तथा न ही ब्राह्मणों से द्वेष करने देना! अन्यथा इसी देह से उसका पर्नुजनम हो जायेगा। राजा ने वचन दिया कि हे! ब्राह्मण देवताओं मैं ऐसा नहीं करने दूँगा। तब ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया, और राजा ने ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देकर विदा किया। ब्राह्मण अपने-अपने स्थानों पर चले गये।

राजा खड़गलसेंण के चौबीस रानियाँ थीं, उनमें से रानी चम्पावती के पुत्र हुआ। राजपुत्र का नाम सुजान रखा गया। राजपुत्र वास्तव में महा बलशाली, बुद्धिमान था। उसने बारह वर्ष की आयु में ही चौदह विद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। वह शस्त्र विद्या में भी निपुण हो गया। लोग राजपुत्र से डरने लगे।

उसी समय जैन धर्म के मानने वाले आये और उन्होंने राजपुत्र को जैन धर्मोपदेश दिया जिससे राजपुत्र प्रभावित हुआ और सब मत के विरुद्ध हो गया, ब्राह्मणों से द्वेष करने लगा। राजपुत्र ने अपने सम्पूर्ण राज्य में शिवमूर्ति का खण्डन कर जैन मंदिर स्थापित किए। केवल उत्तर दिशा ही शेष रह गई जिस ओर जाने से राजा ने मना कर रखा था। लेकिन राजपुत्र कब मानने वाले था, वह ७२ उमरावों सहित उत्तर दिशा की ओर रवाना हो गया। वहां जाकर राजपुत्र ने देखा कि सूर्यकुण्ड पर ६ ऋषिश्वर पाराशर, गौतम, भारद्वाज आदि यज्ञ करा रहे हैं। राजपुत्र ने क्रोधित होकर अपने साथ में आए उमरावों को आदेश दिया कि इन ब्राह्मणों को मारो और यज्ञ सामग्री को नष्ट कर दो। यह सुन ब्राह्मणों ने सोचा कि यहाँ तो राक्षस आ गये और उन्होंने राजपुत्र का ख्याल न कर श्राप दे दिया कि हे ! अबुद्धियों, तुम जल पाषाणवत् हो जाओ । तब ७२ उमराव और राजपुत्र घोड़ों सहित पाषाणवत् हो गए! जब राजा ने यह समाचार सुना तो राजा ने प्राण छोड़ दिए । जब राजा के संग सोलह रानियाँ भी सति हो गई और संपूर्ण राज्य को रजवाड़ों ने दबा लिया, तब राजपुत्र की स्त्री और बहत्तर उमरावों की स्त्रियाँ रुदन करती हुई ब्राह्मणों के चरणों में आकर गिर पड़ी। यह देख ब्राह्मणों ने उन्हें उपदेश दिया और एक गुफा बतला दी कि तुम्हारे पति शिव-पार्वती के वरदान से पुन: शुद्धबुद्धि हो जायेंगे। ऐसा सुनकर वे सब शिव पार्वती का स्मरण करने लगी। ब्राह्मणों के कहे अनुसार वहाँ भगवान शिव-पार्वती आये। जब सब स्त्रियाँ पार्वती के पैर लगीं तब पार्वती जी ने सौभाग्यवती हो, 'चिरंजीव हो' ऐसा आशीर्वाद दिया। तब राज पत्नि के साथ बहत्तर उमरावों की स्त्रियाँ हाथ जोड़कर कहने लगी–देवी, वरदान सोच समझकर दीजिये क्योंकि हमारे पति तो ब्राह्मणों के श्राप से पत्थर हो गए हैं । ऐसा सुनकर पार्वती जी ने भगवान महादेव जी के चरणों में गिरकर जब प्रार्थना की तब, महादेव जी राजपुत्र के साथ ही बहत्तर उपरावों को जागृत कर दिया जब उन बहत्तर उमरावों ने शंकरजी को घेर लिया तब शंकरजी ने वरदान दिया कि तुम क्षमावान हो। लेकिन राजपुत्र सुजान पार्वती का रूप देखकर उन पर मोहित हो गया, तब पार्वतीजी ने उसे श्राप दे दिया, कि तू मांगकर खायेगा। और इन ७२ परिवारों की वंशावली तुम्हारे पास रहेगी। ये तुम्हें अपना जागा मानेंगे।

जब बहत्तर उमरावों ने शंकरजी की प्रार्थना की तब महादेव जी ने कहा कि तुम क्षत्रित्व एवं शस्त्र को छोड़कर वैश्य रूप धारण करो। लेकिन हाथों की जड़ता के कारण उनके शस्त्र नहीं छूटे। तब महादेव जी ने कहा कि तुम सूर्यकुण्ड में स्नान करो। तब सूर्यकुण्ड में स्नान करते ही शस्त्र छूट गये और उनकी तलवार से लेखनी, भालों से डांडी, ढालों से तराजू बन गई और उन्हें वैश्य पद मिल गया जब शंकरजी ने इन उमरावों को वैश्य बना दिया तब ब्राह्मणों ने शंकरजी के सामने आकर प्रार्थना की कि हमारा यज्ञ कब सम्पूर्ण होगा, क्योंकि इन्होंने तो विध्वंस किया है। शंकर जी ने उत्तर दिया-तुम इन्हें दीक्षा दो जिससे ये स्वधर्म से चलने लगेंगे। ऐसा कहकर शंकरजी अंतर्ध्यान हो गये और वे ७२ उपमराव छ: ऋषियों के चरणों में गिर पड़े । एक-एक ऋषि ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया इस प्रकार से हर एक ऋषि के १२-१२ शिष्य हो गए। वे ही अब यजमान कहलाये जाते हैं।

तभी से भगवान महेश्वर के नाम पर 'माहेश्वरी' जाति बनी। ७२ उमरावों के नाम पर ७२ खाँपें बनी। इस दिन ज्येष्ठ शुक्ल नवमी थी। इसलिये इसे महेश नवमी कहते हैं।

निर्जला एकादशी

ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी को निर्जला एकादशी आती है। इसे भीमसेनी एकादशी भी कहते हैं। यह सबसे बड़ी एकादशी मानी जाती है। भगवान व्यास का कथन है कि यदि कोई वर्ष भर की एकादशी नहीं कर सके तो केवल इस 'निर्जला एकादशी' का व्रत कर लेने से वर्ष की २४ एकादशियों कै व्रत का फल व्रती को प्राप्त हो जाता है।

इस दिन आम और शक्कर पर रुपया रख 'कल्पना' निकाल कर सासूजी को देकर उन्हें प्रणाम किया जाता है। जो यह निर्जलव्रत करे वह द्वादशी के दिन प्रात:काल स्नान करके, जल का घड़ा, शर्बत और 'सीधा' ब्राह्मण को देकर फिर जलपान करे।

छोटी तीज

श्रावण शुक्ला तृतीया को ठकुरानी तीज आती है। इसे छोटी तीज या हरियाली तीज भी कहते हैं। उत्तरी भारत के सभी नगरों में यह तीज विशेष रूप से मनायी जाती है। घर-घर में झूले पड़ते हैं, पकवान बनते हैं और मेंहदी भी लगाते हैं।

यह लक्ष्मी जी का व्रत है। अत: लक्ष्मी जी की अर्चना करनी चाहिये। इस दिन एकासना व्रत करना चाहिये। इस दिन सुबह नहा धोकर नये वस्त्र पहनकर मंदिर जाकर या घट में ही लक्ष्मी जी की अर्चना करनी चाहिये। शक्कर पर रुपया रखकर कल्पना निकाल कर सासू जी को देकर प्रणाम करना चाहिये। दोपहर में १२ बजे के बाद भोजन करना चाहिये। कुछ लोग इस दिन केवल एक अनाज अर्थात् केवल गेहूँ ही खाते हैं।

नाग पंचमी

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में पंचमी का दिन नागपंचमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन स्त्रियाँ नागदेवता की पूजा करती हैं। कुछ लोग एकासना व्रत भी करते हैं। यह व्रत भाई के लिये करते हैं। इस दिन नागदेवता को दूध अवश्य पिलाना चाहिये। कुछ लोगों के यहाँ ठंडा (बासी) भोजन भी किया जाता है।

पूजा का सामान-

जल का लोटा, कच्चा दूध, मोली, कुशा, कच्चे सूत का जनेऊ, हल्दी, कुंकुम, चावल, चंदन, अबीर, गुलाल, सिंदूर, इत्र, गेरु, काजल या कोयला पुष्प, दूर्बा, बेलपत्र, धतूरा, गाँजा, दीपक, बत्ती, घी, अगरबत्ती, कपूर, धूप आदि।

पूजा की विधि- इस दिन अपने घर की पद्धति के अनुसार नाग को माँड़ कर पूजा करनी चाहिये।

(१) दीवाल पर ७ नाग (सर्प) माँडकर। नाग की लकीर एक कुंकुम से और १ काजल या कोयले को थोड़े से दूध में पीसकर खींचीं जाती है।

(२) मटकी पर नाग देवता का चित्र माँडकर प्रमुख नागों का पूजन किया जाता है। मटकी के नीचे मिट्टी की पाल बनाकर उसमें जल और कच्चा दूध सींचना चाहिये।

(३) पाटे पर घी से नाग माँडकर पूजा करनी चाहिये।

(४) मूँज की रस्सी में सात गाँठ लगाकर नाग बनाकर पाटे पर रखकर भी पूजा करनी चाहिए।

(५) नाग देवता की फोटो रखकर भी पूजा की जाती है।

कहानी - १

एक नगर में एक ब्राह्मण रहता थे। उसके पाँच बहुएँ थी। श्रावण मास लगते ही चारों बहुएँ तो पीहर चली गईं। परन्तु छोटी के पीहर में कोई भाई नहीं था। वह उदास चित्त से घर में बैठी थी। वह दिन नागपंचमी का था। उस बेचारी ने दु:खी होकर पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग को भाई के रूप में याद किया। वह मन से कहने लगी मेरे पीहर वासा नहीं है नाग देवता मुझे पीहर वासा देवें।

करूणा युक्त दीनवाणी सुनकर शेषनाग भगवान को उस पर दया आई। वे ब्राह्मण का वेष लेकर उसके घर आये और ससुर को बोले मैं बाई का मामा हूँ । इतने दिन मैं परदेश में रहता था। जिससे मैंने बाई को देखा नहीं, बाई ने भी मुझे नहीं देखा। यहाँ आने से मालुम हुआ बाई यहाँ रहती है। मैं उसको लेने आया हूँ। ससुर ने उसके साथ बहू को रवाना कर दिया। बहू ने मन में विचार किया कि मामा मुझे कहाँ ले जा रहे हैं। उतने में थोड़ी दूर रास्ता तय करने पर नाग देवता की बाबी आई नाग देवता ने नाग का रूप ले लिया इससे बाई डरने लगी। नाग देवता बोले डरो नहीं, तुमने मुझे याद किया इसलिये तुम्हें लेने आया था। मेरी पूँछ पकड़कर तुम मेरे पीछे आ जाओ। वे उसे नाग लोग ले गये । नाग देवता नागिन और बच्चों से बोले यह मेरी बेटी है इसे तकलीफ नहीं देना।

वहाँ वह निश्चिन्त होकर रहने लगी। पाताल लोक में जब वह वहाँ रह रही थी उसी समय नागिन ने बहुत से बच्चों को जन्म दिया। वह दिया लेकर खड़ी थी। नाग के उन बच्चों को देखकर वह डर गयी। उसके हाथ से दिया नीचे गिर गया परिणाम स्वरूप बच्चों की पूँछें जल गई। नागिन को क्रोध आ गया और वह नागदेवता से बोली इसे ससुराल पहुँचा दो । एक दिन नाग देवता ने उसको संपत्ति देकर तथा मनुष्य रूप लेकर उसे ससुराल पहुँचा दिया। नाग देवता के बच्चे बड़े हुए और माँ को पूछने लगे कि हम लोगों की पूँछ क्यों टूटी हुई है, तब माँ ने सबको हकीकत बताई । तब वे बच्चे क्रोध में उसके घर गये।

नागपंचमी का दिन था। इधर यह अपने नाग भाइयों का रास्ता देख रही थी। वे आते नहीं दिखे। तब पाटे पर पूजा माँडकर दीवाल पर नागदेवता का चित्र बनाकर दूध का भोग लगाकर वह प्रणाम करने लगी। जय नागदेवता जहाँ मेरे खाँड़े-बाँड़े भाई होंवें वहाँ वे राजी खुशी रहें। यह देखकर नाग के बच्चों का क्रोध चला गया। अपनी ही पूजा में श्रद्धा-मग्न उसको देखकर वे प्रसन्न हुए और उनका क्रोध समाप्त हो गया। उनके मन में प्रेम उत्पन्न हुआ। जिससे उन्होंने वहाँ रात को वास किया। वे बहिन के हाथ से भोग का दूध और लाई खाकर सुबह रवाना हुए । जाते समय वे नाग नवरत्न का हार रखकर गये और सर्प कुल से निर्भय होने का वरदान भी दिय। उन्होंने यह भी बाताया कि श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को हमें भाई रूप में जो पूजेगा उसकी हम रक्षा करेंगे।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

कहानी –२

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके खेत में साँप की बॉबी थी। श्रावण के महीने में नागपंचमी का दिन आया। उस दिन किसान हल लेकर खेत पर गया। खेत जोतते समय नाग की बांबी में हल का फल लग गया। बाँबी में नाग के बच्चे रहते थे। अत: फल लगने से वे सब तुरन्त मर गये।

कुछ देर बाद नागिन आई, वह अपना घर ढूँढने लगी। उसको अपना घर और बच्चे नहीं दिखे । वह इधर-ऊधर देखने लगी, उसको नागर खून से भरा हुआ दिखा। तब उसके मन में विचार आया कि इसी नागर से मेरे बच्चे मरे हैं। यह जान उसको क्रोध आया उसने निश्चय किया कि इस किसान को निर्वंश कर दूँगी। वह फुँफकारती हुई किसान के घर गई। घर में उसने किसान को उसकी पत्नी और उसके बच्चों को डस लिया जिससे वे सब तुरन्त मर गये।

फिर उसको मालूम हुआ कि किसान की एक बेटी दूसरे गाँव में है। उसको मारने के लिये भी वह निकली। जिस गाँव में वह ब्याही हुई थी वहाँ उसके घर पहुँची । वहाँ उसने देखा कि वह पाटे पर नाग-नागिन और नाग का कुल बनाकर उसकी पूजा कर रही है, और दूध नैवेद्य, लाई, दूर्वा भी चढ़ाया है और बहुत आनन्द से पूजा करके प्रार्थना कर रही है। पूजा देखकर वह प्रसन्न हुई । दूध पीकर सन्तुष्ट हुई। चंदन में आनन्द से लोटी। लड़की आँखे बन्द करके प्रार्थना कर रही थी। इतनी देर नागिन खड़ी रही। फिर उसने पूछा बाई तुम कौन हो, तुम्हारे माँ बाप कहाँ हैं? यह सुनकर लड़की ने आँखे खोली। तब उसको साक्षात् नागिन नजर आई। वह घबरा गई । तब नागिन ने कहा– घबरा मत और मेरे सवालों का जवाब दे। तब उसने सारी हकीकत बताई, वह सुनकर नागिन को बहुत बुरा लगा। वह मन में कहने लगी यह अपनी इतनी भक्ति से पूजा कर रही है। और अपना व्रत पाल रही है और मैं इसके पिता के वंश को निर्वंश कर रही हूँ, यह अच्छा नहीं है। बाद में नागिन ने उसको उसके पिता की हकीकत बताई। यह सुनकर लड़की को दु:ख हुआ। फिर लड़की ने माँ बाप को जीवित करने का उपाय पूछा। तब नागिन ने उसको अमृत दिया। अमृत लेकर वह सीधी पीहर गयी और घर के सभी मृत व्यक्तियों के मुँह में अमृत डाला। जिससे सभी जीवित हो गये, और सबको खुशी हुई।

फिर लड़की ने पिताजी को घटी हुई सब घटना सुनाई तब पिता ने पूछा यह व्रत कैसे करना चाहिये। तब लड़की ने व्रत की पूरी विधि बताई और आखिर में कहा यदि आपसे कुछ नहीं होवे तो कम से कम नागपंचमी के दिन जमीन नहीं खोदना, साग भाजी नहीं चीरना, तवे पर कुछ नहीं सेकना। तला हुआ नहीं खाना। इतना नियम पालन करना और नागदेवता को नमस्कार करना । तब से किसान ने नागपंचमी की पूजा की। हे नागिन! जैसे लड़की पर प्रसन्न हुई, उसी प्रकार तुम हम सब पर-भी प्रसन्न होना।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी

कजली तीज या सातुड़ी तीज

तीज का सिंजारा-

कजली तीज या 'सातुड़ी तीज' भाद्रपद के कृष्णपक्ष की तीज कहलाती है। यह माहेश्वरियों में ही मनायी जाती है। यह हमारा एक महत्वपूर्ण त्यौहार है जिसमें लड़कियाँ और सुहागिन स्त्रियाँ दोनों ही व्रत करती हैं। तीज के पहले दिन सिंजारा मनाने की परम्परा है। जिसे करीब सप्ताह पूर्व से ही मनाने लगते हैं । यह एक हर्ष-उल्लास, सुख-सौभाग्य का त्यौहार है।

इस दिन सुहागिनें सर धोकर नये वस्त्र पहनकर मेंहदी रचाती हैं। सज-संवर कर झूला-झूलने, गीत गाने की परम्परा है। इसमें परिवार के बड़े स्नेह स्वरूप छोटी बहू-बेटियों को वस्त्र, गहने, शृंगार सामग्री आदि उपहार स्वरूप देते हैं। बहन-बेटियों को बुलाकर उनके मन पसन्द भोजन व नाश्ता करवाते हैं। घर में विशेष भोजन बनाते हैं और बहुओं को भी बड़े चाव से खिलाते पिलाते हैं।

इस तीज पर विशेष रूप से चार तरह के सातु-गेहूँ, चावल, चना, मैदा से बनते हैं।

सातु बनाने का सामान-

गेहूँ, चना, चावल का भुना हुआ आटा, या मैदा पिसी शक्कर, घी, बरक और मेवा।

सातु बनाने की विधि–

सातु का आटा छानकर बराबर या स्वादानुसार कम शक्कर मिलाते हैं। घी हल्का गर्म करके डलाते हैं। हाथों से मसलकर इसके पिन्डे बनाते हैं। जिसे हम बारा बहते हैं। इन्हें हम बरक व मेवा से सजाते हैं। पारम्परिक सिग सवा किलो की बनती है।

पूजन सामग्री–

गंगाजी की मिट्टी, अथ्वा कोई भी मिट्टी, कच्चा दूध, दही, जल का लोटा, नीम की डाली या बोर की डाली, आँकड़े के पत्ते, फूल, रोली, चावल, मेंहदी, मोली, काजल, गोटा, लाल वस्त्र, दीपक, घी, अगरबत्ती, नथ, अनार, खीरा, नींबू, केला, सेब, पान, सवुपारी, रुपया, सातु का छोटा लड्डू आदि।

पूजा विधि-

तीज के दिन दोपहर में पाटे पर चिकनी मिट्टी भिगोकर तालाब बनाते हैं। उसके एक किनारे पर नीम की डाली रोप देते हैं। शाम को पूजन सामग्री की थाली सजाकर सभी व्रत करने वाली स्त्रियाँ लड़कियाँ सोलह शृंगार करके पूजन करती हैं। बनाए तालाब में नीमड़ी को कच्चे दूध व जल से सींचते हैं। नीमड़ी को गोटा लगा वस्त्र ओढ़ते हैं। रोली-चावल व सातु अर्पण कर मिट्टी के तालाब की मेड़ पर दीपक जलाते हैं। तालब पर रोली, मेंहदी और काजल की ८ या १६ टीकी लगाते हैं। दीपक की रोशनी में तालाब में खीरा, नीबू, फल नथ के मोती, नीमड़ी का वस्त्र तथा बारा (सिग) की छाया देखते समय बोलते हैं नीमड़ी में नीबू दिख्यो-दिख्यो सोही टूटियो । इसी तरह सारी चीजों का नाम लेकर छाया देखनी चाहिये। पान, सुपारी, रुपया भी चढ़ाते हैं तथा नीमड़ी, तीज की कहानी सुनते हैं। गीत भी गाते हैं। चन्द्रमा निकलने पर अर्घ्य देकर सातु पासते हैं। सातु पासने के पहले या बाद में कच्चा दूध-दही मिलाकर आक के पत्ते का दोना बनाकर सात बार पीते हैं। इस व्रत में १६ साल तक बारा का व्रत किया जाता है। जिसमें चार साल गेहूँ, चार चाल चना, चार साल चावल तथा चार साल मैदा का सातु बनाकर पिंडा पासते हैं। सातु पासते समय पहले सात चुटकी सातु पिंडा से लेकर नीमड़ी को चढ़ाकर फिर खाया जाता है। सोलह साल पूरा होने पर अधसेरी करते हैं जिसमें सवा पाँच सेर का पिण्डा परात में जमाते हैं बीच में एक नारियल का गोला (गट) लगाया जाता है। पति पत्नी जोड़े से इसे चाकू से बधारते है। फिर इसे परिवार में बाँटा जाता है। सातु के पिंडे घर के सभी सदस्यों के नाम से भी बनाते हैं। चौथ की सुबह नहाकर पहले सात चुटकी सातु व नीम की पत्ती मुँह में रखकर व्रत को पूर्ण करते हैं। पूजा का चढ़ा हुआ सामान ब्राह्मण को दे देते हैं।

नीमड़ी माता की कहानी

एक नगर के सेठ-सेठानी धन-दौलत से तो बहुत सम्पन्न थे लेकिन उनके कोई सन्तान नहीं थी। यह उनकी सबसे बड़ी चिन्ता थी। तब उस सेठानी ने भाद्रपद की बड़ी तीज का व्रत किया। उसका उद्यापन करके नीमड़ी माता से प्रार्थना की कि यदि मुझे पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी तो मैं सवा मन का सातू (सत्तू) चढ़ाऊँगी। नीमड़ी माता ने उसकी इस प्रार्थना को स्वीकार किया और सेठानी को एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। सेठानी व सेठ पुत्र की प्राप्ति से बहुत प्रसन्न हुए और खुशियाँ मनाने लगे। इसी खुशी में वह सेठानी भूल गई कि उसने नीमड़ी माता को सवा समन का सातू चढ़ाने को कहा था। इस तरह समय निकलता गया और सेठानी के सात पुत्र हुए तब भी उसने सातू नहीं चढ़ाया।

सेठानी के लड़के बड़े हुए। पहले पुत्र का विवाह हुआ लेकिन सुहाग रात के दिन ही उसे सर्प ने डस लिया। इस तरह उस सेठानी के छः पुत्रों को सर्प ने डस लिया। अब उसका अन्तिम पुत्र बचा था। उसके भी विवाह की बात चली लेकिन सेठ-सेठानी अब उसका विवाह नहीं करना चाहते थे। तब उस गाँव के बड़े-बुजुर्गों के कहने पर सेठ-सेठानी मान गए। तब सेठजी ने इधर-उधर लड़कियाँ देखी। वह एक गाँव में गए वहाँ उन्होंने देखा कि कुछ लड़कियाँ खेल रही हैं और वे मिट्टी के घर बनाती हे और उन्हें तोड़ डालती हैं। लेकिन उनमें से एक लड़की ऐसी थी कि जो अपना घर नहीं तोड़ रही थी। सेठ ने सोचा यह लड़की घर बनाने वाली है न कि तोड़ने वाली। जब वह लड़कियाँ खेल चुकीं तो सेठ उसी लड़की के पीछे-पीछे उसके घर पहुँच गया और उसके माता-पिता से मिलकर सगाई

तय कर दी और निश्चित तिथि पर उसने पुत्र का विवाह कर दिया। बारात चली । सेठ के घर तक का मार्ग बहुत लम्बा था। लड़की की माँ ने अपनी पुत्री को सातू देकर कहा– मार्ग में नीमड़ी माता की पूजा करके सातू पास धरके कलपना निकालना और अपनी सासू को घर पहँचकर दे देना।

मार्ग में तीज के दिन पुत्रवधू ने तीज का व्रत रखा। उसके श्वसुर ने कहा–बहू कुछ खाना खा लो। बहू ने कहा–आज मेरा तीज का व्रत हैं । मैं संध्या समय अपना व्रत, नीमड़ी माता की पूजा करके, तोडूँगी । मार्ग में नीमड़ी के पास संध्या समय जब बहू नीमड़ी माता की पूजा-अर्चना करने गई तो नीमड़ी माता अपने स्थान को छोड़ पीछे हट गई। यह देख बहू ने कहा– हे माता! मुझसे क्या गलती हुई जो आप मेरी पूजा स्वीकार नहीं कर रही हैं। तब माता ने कहा– तेरी सास ने पुत्र होने पर सवा मन सातू चढ़ाऊँगी ऐसा कहा था, लेकिन उसके सात पुत्र हुए और वह ऐसा करना भूल गई। तब बहु ने प्रार्थना करके माता को मनाया और कहा कि–सासू से भूल हो गई। अब वह अपनी भूल को पूरा करेंगी। कृपया मेरे सभी ज्येष्ठों को पुन: जीवित कर दो। माता भी उसकी श्रद्धा के सामने कुछ न कह सकी और आशीर्वाद दे दिया।

अगले दिन बारात सेठ के घर पहुँची । बहू ने जैसे ही घर में अपने कदम रखे तभी सेठ के छ: पुत्र वहाँ उपस्थित हो गए। यह देख सभी बहू के शुभ आगमन पर प्रसन्न हुए। तब बहू ने अपनी सास से कहा–माँ जी ! आपने यह क्या किया? आपने जो कहा वह पूरा नहीं किया। तब बहू ने सास को पूरी बात याद करवाई। यह सुन सासू को अपनी बहुत बड़ी गलती काँपता चला। तब उसने माता का पूजन करने का प्रण लिया।

अगले वर्ष कजली तीज पर सासू ने सवा सात मन का सातू चढ़ाकर तीज माता की पूजा करके प्रायश्चित किया और गलती की क्षमा माँगी। इस तरह तीज माता की कृपा हुई। जो पूजा करने का व्रत ले उसे पूरा करना चाहिए।

कहानी - १

एक साहूकार था। उसे चार बेटे थे। तीन कमाऊ थे, चौथा कमाऊ नहीं था और कोढ़ी था। सारा दिन वह एक वेश्या के घर पड़ा रहता और जब कभी रुपयों पैसों की जरूरत पड़ती तब घर आता। पति को वेश्या के घर पहुँचाने का भार पत्नी पर था।

उसकी पत्नी दिन भर जिठानियों के यहाँ काम करती और पेट भरती। कजली तीज आई। उस दिन इसने सब देवरानी जिठानियों के दालें और शक्कर पीसी और घट्टी झाड़ कर आटा शक्कर मिलाकर अपना पिंडा बनाया। घर के सब काम करके शाम को नीमड़ी माता की पूजा करके चन्द्रमाजी के अर्घ्य देकर, पिंडा पासने बैठी। इतने में पति आया और बोला ''बार बार खोल किवाड़''। उसने किवाड़ खोला, खोलने के साथ ही नशे में चूर पति कहने लगा मुझे वापस वेश्या के घर पहुँचा दे। वह उसको गोदी में उठा कर पहुँचा कर आई। सातू पासने बैठी थी कि फिर उसका पति आया, फिर किवाड़ खोलने के लिए आवाज दी। किवाड़ खोलकर अन्दर आते ही बोला मुझे वापस वेश्या के घर पहुँचा। उसने वापस उसको वेश्या के घर पहुँचाया। ऐसे करते-करते छ: बार हो गया। घर वापस आने लगी तब वर्षा होने लगी, तब उसने कजली तीज माता के हाथ जोड़े, हे माता ! अब तुम ही हो।

''यहाँ ऐसे वहाँ वेसे कजली तीज होगी कैसे''

छठी बार आते समय रास्तें में आड़ी नदी बह रही थी, वहाँ आकाशवाणी हुई।

''अँवतड़ी बाई जाँवतड़ी बाई
दोना घोल कर पीले।
ज्युँ दोना घोल कर पीवे त्युँ
तुम्हारे पिया की कोढ़ झड़े ।।''

जिससे तुम्हारे प्रिय भरतार घर आयेंगे और उनका कोड़ ठीक होगा। वहाँ और तो कुछ था नहीं। एक आकड़े का झाड़ था, इसलिए उसने उसका पत्ता तोड़कर दोना बनाकर नदी में से पानी लेकर पिया। उधर से एक कच्चे दूध का दोना आया । उसने दोनो लिया और दूध पिया । दोने के टुकड़े करके फेंक दिये, घर आई पिंड़ा पासने बैठी।

इधर वेश्यसा के साथ जब उसके पति का झगड़ा हुआ, तब तीज माता ने उसके पति को सुबुद्धि चेताई और वह वेश्या को अपना दिया हुआ धन और गहने उससे वापस लेकर रवाना हुआ। आते समय उसने नदी में स्नान किया, स्नान करते ही उसकी देह एकदम कंचन जैसा हो गया। वह घर आया और बोला ''बार-बार खोल किवाड़'', तब पत्नी बोली छ: बार हो गया। अब मैं किवाड़ नहीं खोलूँगी। मैं पिंडा पासने बैठी हूँ। वह बोला अब मैं वापस नहीं जाऊँगा। वह बोली मुझे वचन दीजिये, वचन दने पर ही मैं किवाड़ खोलूँगी। जब पति ने वचन दिया। तब उसने किवाड़ खोला। वेश्या से वापस लाया हुआ धन पत्नी को सौंप दिया। फिर दोनों ने साथ में जोड़े से कजली तीज माता की पूजा की, पिड़ा पासा, पान खाए और चौपड़ पासा खेला। कजली तीज माता की कृपा से धन के भंडार भर गये। घड़िया घड़ रहे हैं, जड़िया जड़ रहे हैं, सब और आनन्द हो गया।

दिन हुआ वह काम वह काम पर नहीं गई। तब जिठानियों ने बच्चों को बुलवाने भेजा। बच्चे दौड़ते दौड़ते आये और बोले काकी-काकी काम पर चलो। तब वह बोली–मैंने बहुत दिन काम किया अब आपके काका घर आ गये हैं, अब मैं काम पर नहीं जाऊँगी। मुझ पर तो कजली तीज माता प्रसन्न हुई हैं ! बच्चे घर गये माँ को कहने लगे, अब काका घर आ गये इसलिये काकी काम पर नहीं आयेगी।

जिठानियों ने पूछा इतना वैभव कहाँ से लाई? हाट फाड़ी की बाजार फाड़ी, चोरी की या डाका डाला। उसने कहा मुझे तो कजली तीज माता ने दिया है। हे कजली तीज माता! जैस उस पर प्रसन्न हुई, वैसे सब पर प्रसन्न होना।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

कहानी - २

एक ब्राह्मण था, उस के सात बेटियाँ थी। बड़ी तीज आई। कोई बोली मुझे धाणा का बारा लाना, कोई बोली मुझे चना का बारा लाना, कोई बोली मगद का, तो कोई बोली चावल का। ऐसे सातों जणी सात प्रकार के पिंडे लाने के लिये बाप को बोली। ब्राह्मण ने विचार किया, मैं इतना गरीब हूँ, इतना सामान कहाँ से लाऊँगा। ब्राह्मण विचार करते करते एक साहूकार के यहाँ चोरी करने गया। वहाँ सेठानी ने थोड़ी देर पहले पिंडे साँधे थे। सामान वहीं पड़ा था। रात हो गई जिससे सेठानी सो गई। ब्राह्मण गया और वहाँ सामान देखकर वहीं पिंड़े साँधने बैठ गया। थप-थप की आवाज सुनकर सेठानी जग गई । सेठजी को कहा नीचे कोई चोर आया है। सेठजी नीचे गये और देखे तो ब्राह्मण पिड़ा साँध रहा था। उससे पूछा तुम कौन हो चोर हो, कि भूत हो। तब ब्राह्मण बोला, मैं भूत नहीं, चोर नहीं, ब्राह्मण हूँ। मेरे घर में गरीबी हैं। मेरे सात बेटियाँ हैं, तीज आई, उनको पिंड़ा भेजना है। दूसरा मुझे कुछ नहीं चाहिये। सेठानी ने उस ब्राह्मण को सात बेटियाँ के लिये और आठवाँ उसकी पत्नी के लिये ऐसे आँठ पिड़े, साड़ियाँ और मेंहँदी, मोली दी, उसको धर्म का भाई कहा और सब बेटियों को त्यौहार देने का कहा। खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

कहानी - ३

एक साहूकार था। उसके सात बेटे थे। छः बहूओं के पीहर से तीज त्यौहार पर मिठाइयाँ और कपड़े-लत्ते आते। सातवीं के

पीहर में कोई नहीं था, इसलिये उसके पास कुछ नहीं आता था, इसलिये जिठाणियाँ ताने मारती थीं।

एक बार बड़ी तीज पर छः बहुओं के पीहर से सातू के पिंडे और लाडू आये, कपड़े साड़ियाँ आई। सब बहुएँ सातवीं को दिखाकर ताने मारने लगीं। तब वह बहुत उदास हो गई । उसने मन में सोचा आज मेरे पीहर में भी कोई होता तो मेरे भी सब चीजें आती। यह देखकर उसका पति बोला तू चिन्ता मत कर, मैं तुम्हारे लिये सातू और साड़ी लाऊँगा।

वह बाजार गया, एक महाजन अपनी दुकान बन्द कर रहा था, वह चुपके से दुकान में घुस गया। थोड़ी रात होने के बाद उसने फुटानों की दाल पीसी, शक्कर पीसी, घी लेकर एक सातू बनाया। दुकान में खड़-बड़ की आवाज सुनकर लोग महाजन के घर गये। उसको जगाकर बोले तुम्हारे दुकान में चोर घुसा है। महाजन भागा-भागा आया और दुकान का ताला खोला।

महाजन ने दरवाजा खोल कर देखा तो पाया कि वहाँ एक बनिये का लड़का सातू का पिंड़ा, चार लाडू, एक सीक चुनड़ी की साड़ी बाँध कर बैठा है। महाजन ने पूछा तुम कौन हो। वह बोला मैं चोर नहीं हूँ, मेरी पत्नी के पीहर नहीं है, उसके लिये मैं सातू का पिंड़ा और चुनड़ी की साड़ी ले जा रहा हूँ। मेरी भौजाइयों के पीहर से ऐसे ही सब बहुत आया है और मेरे पत्नी के पीहर नहीं होने से कुछ भी नहीं आया। वह बहुत उदास है इसलिये मैं चोरी करने आया। तब वह महाजन बोला अब तुम घर जाओ, आज से तुम्हारी पत्नी मेरी धर्म की बहिन है।

उसके बाद से किसी कारण से, किसी के पीहर का नहीं आवे तो इस दिन के लिये घर में बना लेते हैं। हे तीज माता! उसको पीहर वासा दिये वैसे सबको देना।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

कहानी - ४

एक साहूकार था। उसके दो बेटियाँ थी। एक आगली की थी और एक लारली की थी। छोटी बेटी लाड़ली थी। बड़ी बेटी को लारली माँ बहुत दुःख देती थी। भादों का महिना आया। बड़ी तीज आई। सब स्त्रियाँ नीमड़ी माता की पूजा करके बोली, हे ! नीमड़ी माता ! मुझे तुम्हारे समान सबके साथ मीठी मीठी रखना। छोटी बेटी बोली, हे नीमड़ी माता! मुझे तुम्हारे समान सबके साथ खारी-खारी रखना। ऐसे करते-करते बहुत दिन हो गये। एक दिन सब सहेलियाँ खेल रही थी, तब बात बात में एक बोली, मेरा ब्याह होवे तब अच्छा घर चाहिये। दूसरी बोली मुझे तो राजा का घर चाहिये। छोटी बोली मैं बाप की लाड़ली हूँ इसलिये वे बहुत अच्छा घर देखेंगे। बड़ी बेटी बोली मैं तो आप कर्मी हूँ मरे कर्म में जो लिखा होगा, वैसा मुझे मिलेगा। दोनों की बातें, बाप घर में बैठा-बैठा सुन रहा था। एक दिन बाप ने दोनों बेटियों को बुलाकर पूछा, 'तुम आप कर्मी हो, या बाप कर्मी हो। जब बड़ी बेटी बोली मैं आप कर्मी हूँ, छोटी बोली मैं बाप कर्मी हूँ। बाप को बड़ी बेटी पर बहुत क्रोध आया।

थोड़े दिनों बाद साहूकार बेटियों के लिये बींद देखने निकला। छोटी बेटी की सगाई राजा के यहाँ की, और बड़ी बेटी की सगाई एक गरीब साहूकार के लूले पागल बेटे के साथ की। दोनों बेटियों का विवाह किया और उन्हें सीख दी। छोटी बेटी को बहुत दायजा दिया, साथ

में मिठाई का छाबा बाँधकर दिया और बड़ी बेटी को दो-चार टूटे-फूटे बर्तन और ठंडी रोटियों का छाबा बाँधकर दिया। दोनों बरातें रवाना हुई। राजा की बारात पाँच दस कोस आगे जाकर रात में एक जगह ठहरी। भूख लगी तब साथ का छाबा खोले तो देखे तो अन्दर से बासी रोटियों के टुकड़े निकले। तब सब लोग साहूकार को गालियाँ देने लगे और कहने लगे, वाह रे! सगाजी ने साथ में दिये तो बासी रोटी के टुकड़े । आगे राजा देश में पहुँचे। राजा के देश पर शत्रु ने हमला किया और राज्य छीन लिया। राजा को गरीबी आई । सब लोग बहू को कोसने लगे की तुम्हारे पैर से हम लोगों का सत्यानाश हुआ।

उधर बड़ी बेटी के ठंडी रोटियों का छाबा मिठाई से भर गया। टूटे-फूटे बर्तन सोने चाँदी के हो गये। लूला पागल पति अच्छा हो गया। घर जाते ही व्यापार बढ़ गया। बहू का ससुराल वाले बहुत लाड़ प्यार करने लगे।

बहुत दिन हो गये, पहला श्रावण आया। बाप ने सोचा बेटियों को लाने चलें। वह पहले छोटी बेटी के गाँव गया। वहाँ कुएँ पर विश्राम लेने बैठा। पानी भरती स्त्रियाँ बोल रही थी, देखो राजा की नई बहू किस पाय गुमान की आई। आते ही राजा का राज पाट गया, घर में खाराणा-बाराणा हो गये। यह सुनकर साहूकार चिंता में पड़ गया और मन में बोला मैंने तो बेटी को सब अच्छा देखकर ब्याहा और ऐसे कैसे हो गया। साहूकार को बहुत दु:ख हुआ, बहुत पछतावा हुआ। मैंने बहुत दिया, अच्छा वर देखा, पर उसके भाग्य में ऐसा ही लिखा था। पूछता-पूछता जंगल में जहाँ बेटी जँवाई रहते थे वहाँ गया। वहाँ जाने पर सास ससुर बोले आपकी बेटी हम लोगों की सेवा नहीं करती है। हम लोगों के घाटे भी बहुत लग गये हैं। अपनी बेटी को अभी के अभी ले जाओ। घर में आई तो सब सत्यानाश कर दिया। साहूकार बेटी लेकर आया।

दूसरी बेटी को लाने गया। उसी कुएँ पर बैठकर स्त्रियों की बातें सुनने लगा। वे कह रही थी, देखो साहूकार की नई बहू कितने पाय गुमान की आई है, आये बराबर घर में लक्ष्मी आई। बेटा अच्छा हो गया। घर में धन समाता नहीं इतना है। बोलने में भी मीठी है और सास ससुर की सेवा भी बहुत करती है। सबकी आज्ञा मानती है। बहू हो तो ऐसी हो। यह सुनकर साहूकार की छाती भर आई। मन में बहुत पछतावा हुआ। मन में बोला, मैंने तो क्रोध में आकर घर बार अच्छा देखा नहीं, अच्छा दिया नहीं पर इसके कर्म में अच्छा लिखा था तो सब अच्छा हो गया। आगे साहूकार बेटी के यहां गया। उसने बेटी दी थी तब टूटी-फूटी झोपड़ी थी, अब महल-मालिये हो गये। घर में गया तो सब लोग आगे आगे करे, मनवार करे सगाजी-सगाजी करे। वह साहूकार बोला अब बहुत दिन हो गये, श्रावण का महिना आया है, इसलिये बेटी को मेरे साथ भेजो। जब सागाजीबोले आपकी बेटी को अब भेजेंगे नहीं, यह तो हमारे घर की लक्ष्मी है, तब बाप ने बेटी को यह कैसे हुआ।

तब बेटी बोली ‘पिताजी जो कर्म भगवान के यहाँ से लिखकर आया है, उसमें अपने करने से कोई फेर नहीं होता है। आपने मुझे बहुत गरीब देखकर दिया। पर कर्म में सुख था, इसलिए सब अच्छा हो गया। मैं नीमड़ी माता को रोज प्रार्थना करती थी मुझे आप के सरीखी मीठी-मीठी रखना, जिससे सब लोग राजी-राजी रहते हैं। अब मैं आपके साथ नहीं आऊँगी। आपको बहुत अभिमान था कि मैं करूँ जैसे होगा। छोटी का था वह सब चला गया, वही नीमड़ी माता को कहती थी मुझे आप के सरीखी खारी-खारी रखना, सो नीमड़ी माता ने दुराशीश दी और सब लोग उसकी उपेक्षा करने लगे।

साहूकार फिर छोटी बेटी को साथ में लेकर घर गया। भादवा में बड़ी तीज आई। नीमड़ी माता माँड़ी, सब जनी पूजा करने लगी। छोटी बेटी नीमड़ी माता को बोली ‘माता मेरी गलती हुई, मुझे समझ नहीं थी। बड़ी बहिन का उल्टा कहना है इसलिए मैंने कहा मुझे खारी रखना। हे माता, अब आप मुझ पर प्रसन्न होवें, माता मेरी भूल हुई मुझे माफ करे। तब माता ने प्रसन्न होकर उसकी सबसे मीठी-मीठी की, सब लोग लाड़ करने लगे। उसका बाप नीमड़ी माता को हाथ जोड़कर बोला, मुझे अभिमान था मुझे लगता था मैं करूँ वैसे होगा, पर वह सब निष्फल हुआ। अब मेरी बेटी को सुखी करो। नीमड़ी माता की कृपा से छोटी बेटी के घर राज पाट हो गये। ससुर ने उसको लेने भेजा और सब आनन्द से रहने लगे। हे नीमड़ी माता! बड़ी बेटी पर प्रसन्न हुई, वैसे सब पर होना। कहानी कहने वाले पर, और हुँकारा देने वालों पर सब पर प्रसन्न होना।

खोटी की खरी, अधूरी की पूरी।

भाद्रपद चौथ

प्रमुख चार चौथ के व्रत में भाद्रपद चौथ का भी विशेष महत्व है। यह भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी को आती है। इसमें गणेश जी की पूजा और व्रत करके रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन किया जाता है।

पूजा का सामान—जल का लोटा, कुंकुम चावल, सिन्दूर, मोली, पुष्प, दुर्वा, पान, फल, लड्डू, दीपक, अगरबत्ती।

कहानी

एक साहूकार था। उसके सात बेटे थे। सब देवरानियाँ जिठानियों ने चौथ माता का व्रत किया। उनके मन में सीरा खाने की इच्छा हुई। झिलमिल झिलमिल बरसात हो रही थी। बड़ी जिठानी बोली अपने लोग सीरा कैसे बनायें, सासूजी हैं। देवरानी बोली सासूजी का काम मैं करके आती हूँ। वह पानी को गई वापस आकर बोली सासू जी आज बाई जी का पेट बहुत दुख रहा है। सासू जी बोली तुम जानो तुम्हारा काम जाने मैं तो बाई जी के घर जा रही हूँ। जब सासू जी चली गयी, उन्होंने कढ़ाई भर सीरा बनाया और चौथ माता की पूजा की।

चाँद दिखा नहीं, तो छहों देवरानी और जिठानियाँ सो गई। सातवीं जो सबसे छोटी थी उसको नींद नहीं आई क्योंकि वह भूखी थी। उनके घर में उस रात चोर घुसा। उसका नाम उसका नाम कुण्डालो था। उधर छोट बहू को चाँद दिखा। उसको चाँद का नाम नहीं आया इसलिये वह पुकारने लगी देखा भाभी कुण्डालो जी को देखो। ऐसे पुकार कर उसने सब जिठानियों को उठा दिया। सब देवरानी जिठानियों ने मिलकर चन्द्रमा जी की पूजा की औरे जीमकर सो गई।

तड़के चार बजे सासूजी आईं। झाड़ू निकालने लगी तब धन की गठड़ियाँ मिली। उन्होंने सोचा कि देखो बहुएँ कितनी पागल हैं, रात को धन की गठरी यही छोड़ दी। दिन निकले पीछे वह चोर वापस आया और बोला आपकी एक बहू बहुत पढ़ी लिखी है, वह दूसरों का नाम पहचानती है। साहूकार ने चोर से पूछा क्या बात है मुझे बताओ। चोर बोला मैं चोर हूँ आपके यहाँ चोरी करने आया था। मेरा नाम कुण्डालो है। आपकी बहू ने पुकार कर सब देवरानी जिठानियों को उठा दिया। मैं अपने साथ लाया वह धन डर के मारे यहाँ ही छोड़ गया। तब सासू जी ने बहू से पूछा क्या बात है? बहू बोली हम लोगों को सीरा खाने की मन में आई, आपको बाईजी के यहाँ भेजकर पीछे से सीरा बनाया।

सब लोगों को तो नींद आ गई पर मुझे नींद नहीं आई। चाँद दिखा, मैं चाँद का नाम भूल गई इसलिये मैंने उन्हें कुण्डालो का नाम लेकर उठाया। मुझे नहीं मालुम था कि चोर का नाम कुण्डालो है।

तब साहूकार ने साहूकारनी से कहा अब तुम बाहर बैठो, बहुओं को रसोई सौंप दो। आये गये को मुट्ठी दो, यह सब धन बहू के भाग्य से बचा है, नहीं तो सब चोर ले जाता।

हे चौथ-माता ! जैसे आपने उसको धन दिये वैसे ही सबको देना। सुहाग-भाग अमर रखना। कहानी कहने वाले और सुनने वाले को राजी-खुशी रखना।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी

ऊबछट

भाद्रपद कृष्णा षष्ठी को 'ऊबहट' आती है। इसे चंदन छठ भी कहा जाता है। यह व्रत रजस्वला दोष निवारण के लिये करते हैं। कुँवारी लड़कियाँ और विवाहित स्त्रियाँ दोनों ही इस व्रत को करती हैं। दिन भर व्रत करके रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन किया जाता है।

पूजा का सामान—

जल का लोटा, कुंकुम, चावल, पीला चन्दन, लालच चंदन, लाल सफेद पुष्प, दीपक, बत्ती, फल, पान, सुपारी, रुपया।

विधि—

सायंकाल ५ बजे के बाद सिर से नहाकर नये या रेशमी लाल-पीले वस्त्र पहनकर सूर्य भगवान को अर्घ्य दिया जाता है। अर्घ्य देने के बाद चंदन और पुष्प चढ़ाकर सूर्य के विभिन्न नामों को भी बोलना चाहिये। फिर घर के मंदिर में या बाहर के मंदिर में जाकर खड़े रहने या बैठे रहने का संकल्प लेकर, रात्रि में चन्द्रमा के अर्घ्य देने तक उस संकल्प का पालन करना चाहिये। शाम के बाद इस व्रत में पानी नहीं पिया जाता। अर्घ्य देने के पश्चात् ही भोजन किया जाता है।

कहानी-

एक ननद-भौजाई थीं। भौजाई कोक शास्त्र पढ़ी हुई थी। ननद बाल विधवा थी। उसने भाई को पाल -पोसकर बड़ा किया और विवाह किया। ऊब छठ का व्रत आया। ऊबछठ धर्म का व्रत है इसलिए ननद भौजाई दोनो ने व्रत किया। चन्द्रमा को अर्घ्य देते समय ननद ने चन्द्रमा से प्रार्थना की' हे भगवान ! मेरी निभाई   जैसे मेरी भौजाई की, निभाना। सुनकर भौजाई हंसी, ननद ने पूछा क्यों हँसी मुझे बताओ। तब उसने कहा, आपने कहा मेरी निभाई जैसे मेरी भौजाई की निभाना, परन्तु आपके तो अभी थोरी से सात बेटे होने बाकी हैं। यह बात ननद को अच्छी नहीं लगी। भाई आया तब बोली मुझे अभी के अभी जला दो। भाई बोला कैसी बातें करती हो। किसी को जिन्दा जलाते हैं क्या? बहन ने जिद पकड़ ली, तब भाई बहन को जलाने को गया वह आधी जली तभी जोर से वर्षा आ गई। सब उसको अधजली छोड़कर घर चले गये। वह आधी जली हुई पुकारने लगी, कोई है जो मुझे बचाओ । उधर से एक थोरी आ रहा था। वह आया, बोला तुम मेरे से विवाह करो तो मैं तुम्हें बाहर निकालूँ । उसको बाहर निकालकर मरहम पट्टी करके वह उसे अपने घर ले गया, और उससे विवाह किया। तब थोरी से उस स्त्री को सात बेटे हुए।

पीहर में माँ बाप का श्राद्ध आया। भौजाई ने भाई से कहा, शहर से बाहर उस थोरी को जीमने का न्योता देकर आना। दूसरे दिन बहिन घूँघट निकालकर परिवार सहित जीमने आई। जीमने के बाद भौजाई बोली, आप लोग अपने बर्तन धोकर दरवाजे के बाहर कंगूरे पर खड़े कर देना। बर्तन रखकर वे लोग चले गये।

रात में पति-पत्नी छत पर घूमने गये। पति ने पूछा दरवाजे के ऊपर सोने से चमकते बर्तन क्यों है? पत्नी बोली आपकी बहिन भांजे जीमकर गये उनके बर्तन हैं। पति हँसा बोला मेरी बहिन को तो मैं अपने हाथ से जलाकर आया, वह कहाँ से आयेगी? पत्नी बोली, चलकर थोरी से पूछते हैं। थोरी से पूछा तब तो थोरी ने सब बात उनको बताई। इसलिए कभी घमंड नहीं करना मेरी बीती जैसे तुम्हारी बीते।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

जन्माष्टमी

श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव पूरे देश में हर्षोल्लास के साथ 'जन्माष्टमी' के नाम से मनाया जाता है। भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में रात्रि में बारह बजे मथुरा के राजा कंस की जेल में देवकी के गर्भ से सोलह कलाओं से युक्त भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। इसी उपलक्ष्य में देश भर के कृष्ण मंदिरों में शृंगार तथा सुन्दर झांकियों का आयोजन होता है। आनंद-मंगल इसका मूल स्वर है। इस दिन भक्त गण व्रत रखते हैं और रात्रि में बारह बजे भजन-कीर्तन साज-सज्जा, घंटे व शंख की ध्वनि के बीच कृष्ण जन्म होता है। आरती के बाद प्रसाद दिया जाता है। सूखे धनिये और मेवे से बनी पंजीरी और पंचामृत इस प्रसाद के प्रमुख आकर्षण होते हैं। कुछ भक्त सुविधा से दिन के बारह बजे भी कृष्ण का जन्म सम्पन्न कर लेते हैं। इस दिन के व्रत-पूजन में कोई विशेष नियम नहीं होता।

बछ बारस

भाद्रपद कृष्णा द्वादशी को बछबारस आती है। यह व्रत बेटे के लिये करते हैं। इसलिये यह व्रत सधवा और विधवा दोनों ही स्त्रियाँ करती हैं। बछबारस के दिन गाय बछड़े की पूजा की जाती है।

पूजा का सामान–

जल का लोटा, एक वस्त्र, हल्दी, कुंकुम, चावल, मेंहदी, मोली, पुष्प, गुड़, रुपया, दीपक, घी, अगरबत्ती, सत्तू, भींगे हुए चना, मोंठ, बाजरा।

पूजा की विधि–

सुबह नहा-धोकर गाय बछड़े की पूजा करनी चाहिये। तथा कहानी सुननी चाहिये। इस दिन गेहूँ चावल नहीं खाया जाता तथा इस दिन चाकू से काटा सामान नहीं खाया जाता। गाय का दूध, घी, इत्यादि भी नहीं खाया जाता। पूजा करने के बाद लड़कों को टीका करके सत्तू के लड्डु अथवा मिठाई दी जाती है।

नोट–

कहीं-कहीं ठंडा भोजन भी किया जाता है।

कहानी - १

एक सास बहू थी। कृष्णपक्ष में बछ बारस का दिन आया। सासू बोली 'बहू मैं गाय चराने वन में जा रही हूँ।' तुम गंवुला (खीचड़ा) चढ़ा देना। बहू बेचारी भोली-भाली थी, उसकी समझ में नहीं आया। गाय के बछड़े का नाम गंवला था, वह समझी नहीं इसलिये उसने बछड़े को काट कर हाँड़ी में चढ़ा दिया।

शाम को सासू गाय को लेकर घर आई और बहू को बोली, बहू बछड़े को छोड़ो, आज बछ बारस है, पहले गाय -गोरा की पूजा करेंगे। तब बहू डरती-डरती हाथों को मसलने लगी, उसको पसीना आ गया। उसने मन में सोचा मेरी सासू तो गंवुला को चढ़ा देना बोलकर गई थी और मैंने चढ़ा दिया। भगवान से प्रार्थना की, आज तुम ही मेरी सत् रखना। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली।

हाड़ी फोड़कर बछड़ा बाहर आया। बछड़े के गले में हाँड़ी की किनार अटकी हुई थी, गर्म-गर्म भाँपे निकलते-निकलते ही वह अपनी माँ का दूध पीने लगा।

यह देखकर सास बहू से पूछने लगी, बहू यह क्या किया? बहू बोली सासूजी आप बोलकर गये कि गंवुला चढ़ा देना तो मैंने चढ़ा दिया, पर भगवान् ने मेरी प्रार्थना सुनकर मेरी लाज रखी और बछड़े को फिर से जीवित कर दिया। उस दिन से सभी औरतें बछ बारस को गेहूँ और कुटी हुई, काटी हुई चीजें नहीं खाती और गाय गोरा की पूजा करती हैं। उसी दिन से इस दिन का नाम ''बछ बारस'' पड़ा और गाय-बछड़े की पूजा होने लगी। हे गाय माता! जैसे उसका सत् रखा वैसे सबाका सत् रखना ।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

कहानी - २

एक गाँव में एक साहूकार रहता था। उसके एक लड़का था। उस लड़के के दो लड़के थे, उसमें एक का नाम हंसराज और दूसरे का नाम बछराज था। गाँव में अकाल पड़ा और बरसात नहीं हुई। साहूकार ने तालाब खुदवाया, तालाब में पानी नहीं आया। गाँव के लोग बहुत तकलीफ में थे। जब साहूकार ने बड़े-बड़े पंडितों से पूछा कि तालाब में पानी क्यों नहीं आया। पंडित बोले कि अगर आपके मोबी (बड़ा) पोते की बलि देवो और यज्ञ करो तो तालाब में पानी आयेगा। साहूकार बोला मेरे दो पोते हैं। अगर एक की बलि दे दूँ तो एक तो रहेगा। गाँव वालों को पानी मिलेगा और सबकी तकलीफ दूर होगी, पर बहू को कहूँ कैसे ? तब उसने बहू को कहा, तुम्हारे पीहर से बुलावा आया है, तुम छोटे बछराज को लेकर पीहर जाओ, हंसराज को यहीं रहने दो। बहू बछराज को लेकर पीहर गई।

इधर साहूकार ने यज्ञ की तैयारियाँ की और तालाब के तीर बड़ी पूजा कराई, यज्ञ कराया। गाँव गाँव के लोगों को बुलाया। ब्राह्मणों को दक्षिणा दी और बड़े पोते हंसराज की बलि दी। बच्चे की बलि लगते ही वर्षा होने लगी और तालाब पानी से भर गया। जब बहू के भाई को मालूम पड़ा, वह बहिन से बोला, देखो तुम्हारे ससुरा जी ने यज्ञ कराये हैं और तुम्हारे यहाँ इतने होम हवन चले हैं। गाँव गाँव के

लोगों को बुलाया है, पर तुम्हें कोई बुलाया नहीं, मुझे भी बुलावा आया है इसलिए मैं जा रहा हूँ।

जब बहिन बोली मेरे ससुराजी भोले हैं। मेरा नाम लिखना भूल गये होंगे। मुझे घर जाने के लिये बुलावा क्यों चाहिये, मैं भी चलूँगी। पर भाई बोला कि तुम्हारे लिये तो बुलावा नहीं आया, मैं कैसे ले चलूँ? वह मानी नहीं और बछ बारस के पहिले दिन अपने घर आ गई। बहू को आई देखकर सास, सुसरे डरने लगे कि अब क्या जवाब देंगे। दूसरे दिन बछ - बारस आई । गाय की पूजा की। सासू बोली चलो बहू तालाब की पूजा करें। दोनो जनें तालाब पर गई। बहू ओघड़ पूजने लगी। पूजा करने के बाद सासू बोली 'बहू तालाब की कोर अपने कसुंबे से खाँड़ी करो।' बहू कहने लगी, मेरे तो हंसराज और बछराज दो बेटे हैं, मैं कोर खाँड़ी नहीं करूँगी। सासू बोली 'मैं कह रही हूँ इसलिये यह कोर खाँड़ी करो। आज तुम्हें मेरा कहना मानना ही पड़ेगा। जब बहू ने कोर खाड़ी की, लाडू रखे और आवाज दी ''आवो रे मेरे हंसराज, बछराज लाडू उठाओ। इधर सासु डरने लगी और भगवान् से प्रार्थना करने लगी मन में कहने लगी, हंसराज अब कहाँ से आयेगा? इतने में तालाब में से गीले कपड़े से मिट्टी से भरा हुआ झरझराते हुए पानी के केशों से, हंसराज ने आकर लाडू उठा लिया। यह देखकर सासू बहू के पाँव पड़ने लगी। बहू बोली, सासूजी यह क्या कर रही हैं? बहू पूछने लगी सासूजी यह सब क्या है? तब सासू ने सारी बात बताई, कहा, हम लोगों ने हसंराज को तालाब में पानी आने के लिये बलि दे दिया था, पर भगवान ने तुम्हारा सत् रखा और हंसराज जिन्दा हो गया।

हे भगवान् जैसे उनका सत् रखा वैसे हमारा भी सत् रखना। कहानी कहते हुँकारा भरते और सुनने वालों का सत् रखना। खोटी की खरी, अधूरी की पूरी मानना।

कहानी - ३

भादवा का महिना आया। बछ बारस आई। इन्द्र की अप्सराएँ मृत्यु के लोक में गाय की पूजा करने आई। उन्होंने आस-पास देखा कहीं भी बछड़े वाली गाय नहीं दिखी। जब वे दूसरी गाय की पूजा करने लगी। आगे से पूजा करें तो सींग से मारे, पीछे से पूजा करे तो पाँव से मारे। जब अप्सरायें बोली, 'ए बाई हम लोग तुम्हारी पूजा कर रही हैं, तुम हम लोगों को पाँव से क्यों मार रही हो।' तब गाय बोली 'संड़ा गाय की क्या पूजा करती हो? आज गोरा और गाय दोनों करते हैं।'

जब इन्द्र की अप्सराओं ने दर्भ का बच्चा बनाकर गाय के पास खड़ा कर दिया और उसको जीवनदान दिया। वह गाय का दूध चुटु-मुटु पीने लगा। इन्द्र की अप्सराओं ने आनंद के साथ गाय की पूजा की। पूजा के पश्चात् गाय बछड़े को लेकर घर गई। गाय की धिराणी बछड़ें को देखकर बोली, तुम तो तुम्हारे बछड़े को लेकर आ गई, मेरे भी बच्चा नहीं है, इसलिये मैं तुम्हें घर में नहीं आने दूँगी।

जब गाय बोली, अभी तो मुझे घर में ले लो। अगली बछ बारस को मैं तुम्हें भी बच्चा ला दूँगी। एक वर्ष पूरा हुआ, अगली बछ बारस आई। गाय वन में गई, इन्द्र की अप्सरायें पूजा करने आई, तब गाय पूजा करने नहीं देवे, आगे से पूजा रके तो सींग से मारे, पीछे से पूजा करे तो पाँव से मारे । जब अप्सराएं कहनें लगी 'ऐसे क्यों कर रही हो? पिछली बार तुम्हारे बच्चा नहीं था तब बच्चा दिया, अब क्या चाहिये तुम्हें?

जब गाय बोली, मेरी मालकिन के बच्चा नहीं है। वह मुझे घर नहीं लेती है उसको बच्चा दोगी, तब पूजा करने दूँगीं। तब अप्सराओं ने दर्भ का बच्चा बनाया, दर्भ का पालना बनाया। गाय के सींग से पालना बाँधा , उस में बच्चे को सुला दिया और संजीवन का छींटा देकर बच्चे को जीवित किया। फिर अप्सराओं ने गाय की पूजा की। गाय बच्चे को लेकर घर गई। जब सब स्त्रियाँ सेठानी को कहने लगी 'तुम्हारी गाय तुम्हारे लिये बच्चा लाई है। सेठानी ने झटपट गाजे-बाजे से गाय, बछड़े और बच्चे को समा लिया और गाय बछड़े की पूजा की।

हे गाय माता ! जैसे उस सेठानी को बेटा दिया वैसे सबको देना। वह राम राज करी वैसे सब कोई करना। कहानी कहते सुनते, हुँकारा भरते को भी बेटा देना।

खोटी की खरी, अधूरी की पूरी।

कहानी -४

एक गाय थी वह चरते-चरते घने जंगल में चली गई। उस जंगल में एक शेर रहता था वह गाय को खाने आया। गाय शेर को बोली, तुम मुझे आज मत खा। मैं बछड़े से मिलकर और दूध पिलाकर सुबह आऊँगी तब तुम मुझे खाना। शेर बोला, कल मरने को कौन आयेगा? गाय बोली मैं तुम्हें वचन देती हूँ। शेर ने गाय से वचन लिया। गाय शाम को घर गई, बछड़े को दूध पिलाने लगी। गाय की आँखों में गर्म गर्म आँसू टपक कर बछड़े की पीठ पर गिरने लगे तब बछड़े ने पूछा, माँ तुम आज क्यों रो रही हो?

गाय बोली, बेटा कल मुझे मरना है, तू आज दूध पी ले। मुझे कल शेर खाने वाला है इसलिये मुझे आज दु:ख हो रहा है।

जब बछड़ा बोला, माँ-माँ, मैं भी कल तुम्हारे साथ वन में चलूँगा। माँ कहने लगी नहीं बेटा तुम मत चलो, नहीं तो शेर तुम्हें भी खा लेगा पर बछड़ा माना नहीं। दूसरे दिन वह भी गाय के साथ-साथ वन में गया। गाय के साथ बछड़े को देखकर शेर बोला, कल एक शिकार था आज दो हो। उतने में बछड़ा शेर से बोला, मामाजी-मामाजी पहले मुझे खाओ, तब शेर बोला मैं तुम्हें कैसे खाऊँ, तुमने तो मुझे मामाजी बोला है। अब तो तुम मेरे भानजे और गाय मेरी बहिन हो गई। शेर ने गाय को घास डाला और चुनड़ी ओढ़ाई। स्वर्ग से

विमान आया और गाय की सच्चाई के कारण से शेर शाप मुक्त हो गया और शेर गााय और बछड़ा तीनों विमान में बैठकर वैकुण्ठ में चले गये।

गाय की सच्चाई से, भगवान गाय का सत्य देखकर जैसे उन्हें वैकुण्ठ भेजे वैसे ही कहानी कहते, हुँकारा भरते सुनने वालों को वैकुण्ठ भेजना।

खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

ऋषि पंचमी

भाद्रपद शुक्ला पंचमी को ऋषि पंचमी कहा जाता है। ऋषि पंचमी को दोहरा महत्व है। पूरे भारत में माहेश्वरी समाज ही ऐसा है जिनके यहाँ रक्षाबन्धन पर राखी न बाँधकर ऋषि पंचमी को राखी बांधने की पुरानी परम्परा है। इस दिन बहन भाई को राखी बांध, उसके मंगल की कामना कर, आपसी प्रेम की डोर को मजबूत करती है। कहते है कि ऋषि पंचमी को बहन ऋषियों का पूजन करके भाई को यदि राखी बाँधे (कच्चे सूत की लाल-पीले रंग से रंगी) तो वह रक्षा बन्धन शक्तिशाली होता है। यह व्रत कोई भी कर सकता है। यह व्रत जाने-अनजाने हुए पापों के प्रक्षालन के लिए स्त्री-पुरुष दोनों को करना चाहिए। व्रत करने वाले को गंगा नदी या किसी अन्य नदी अथवा तालाब में स्नान करना चाहिए। यदि यह सम्भव न हो तो घर पर ही पानी में गंगाजल मिलाकर स्नान कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् गोबर से लीपकर मिट्टी या ताँबे का जल भरा कलश रखकर अष्टदल कमल बनाएं। अरुन्धती सहित सप्त ऋषियों का पूजन कर कथा सुनें तथा ब्राह्मण को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें।

कहानी-

सिताश्व नाम के राजा ने एक बार ब्रह्माजी से पूछा– पितामह! सब व्रतों से श्रेष्ठ और तुरन्त फलदायक व्रत कौन सा है? उन्होनें बताया कि ऋषि पंचमी का व्रत सब व्रतों में श्रेष्ठ और पापों का विनाश करने वाला है। ब्रह्माजी कहा– विदर्भ देश में एक उत्तंक नामक सदाचारी ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी सुशीला बड़ी पतिव्रता थी। उसके एक पुत्र एवं पुत्री थी। उसकी पुत्री विवाहोपरान्त विधवा हो गई। दु:खी ब्राह्मण-दम्पत्ति कन्या सहित गंगातट पर कुटिया बनाकर रहने लगे।

उत्तंक को समाधि में ज्ञात हुआ कि उसकी पुत्री पूर्व जन्म में रजस्वला होने पर भी बर्तनों को छू लेती थी। इससे इसके शरीर में कीड़े पड़ गए हैं। धर्म शास्त्रों की मान्यता है कि रजस्वला स्त्री पहले दिन चाण्डालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी तथा तीसरे दिन धोबिन के समान अपवित्र होती है। वह चौथे दिन स्नान करके शुद्ध होती है। यदि यह शुद्ध मन से ऋषि पंचमी का व्रत करे तो पापमुक्त हो सकती है।

पिता की आज्ञा से उसकी पुत्री ने विधिपूर्वक ऋषि पंचमी का व्रत एवं पूजन किया। व्रत के प्रभाव से वह सभी दु:खों से मुक्त हो गई। अगले जन्म में उसे अटल सौभाग्य सहित अक्षय सुखों का भोग मिला। ८८८

आश्विन मास पितृपक्ष

भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा से आश्विन कृष्णा अमावस्या तक का १५ दिन का समय पितृपक्ष कहलाता है। शास्त्रानुसार ये दिन पितृेश्वरों की शांति के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। श्राद्ध की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसे सभी जाति के लोग मानते हैं। श्राद्धपक्ष में विधिनुसार श्राद्ध करने से पितेश्वरों को शान्ति मिलती है। वे तृप्त होते हैं जिससे परिवार को सुख शांति समृद्धि प्राप्त होती है।

कागोल निकालने की विधि

श्राद्ध के दिन रसोई बनने के बाद एक थाली में पत्तल पर दो-दो पूड़ी चार जगह रखकर उसपर रसोई में बने सब भोज्य पदार्थ थोड़ा-थोड़ा रख दें। संकल्प लेकर जिस व्यक्ति का श्राद्ध हो उसका नाम लेना चाहिए। संकल्प के बाद निकाली गयी भोज्य सामाग्री क्रमश: एक गाय को, एक कुत्ते और कौवे को खिलानी चाहिए। उसके पश्चात् आमंत्रित ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिण में वस्त्र या रुपया अपनी श्रद्धानुसार देना चाहिए।

जिन लोगों को अपने पितरों की तिथि याद नहीं हो तो उन्हें अमावस्या के दिन श्राद्ध करना चाहिए। अमावस्या के दिन शाम को दीपक जलाकर, खाद्य पदार्थ तथा पानी दरवाजे पर रखना चाहिए। जिसका अर्थ है कि पितर जाते समय भूखे-प्यासे न रह जायें तथा दीपक जलाने का आशय है कि उनका मार्ग आलौकित रहे। इस दिन को पितृविसर्जनी अमावस्या कहते हैं।

शारदीय नवरात्र

आश्विन माह की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक की तिथि को शारदीय नवरात्र कहते हैं। पावन अनुष्ठानों के बीच का यह समय देवी उपासना का साधना काल माना जाता हैं। इसमें सार्वजनिक रूप में तो देवी दुर्गा की भव्य मूर्तियों का निर्माण कर उन्हें सार्वजनिक रूप से पूजा पण्डालों में स्थापित किया जाता है। विधिवत पूजन के बाद नवें दिन के बाद विजय दशमी पर नदी में इनका विसर्जन किया जाता हैं।

देवी दुर्गा के नौ रूप बताए गये हैं। नौ दिनों में प्रत्येक दिन देवी के एक रूप का दर्शन पूजन करते हैं। नवरात्री के पहले दिन ही भक्तगण घरों में या देवी मंदिरों में 'घट' की स्थापना करते हैं। देवी पूजन करते है। दुर्गा सप्रशती का पाठ करते है। अखण्ड दीपक भी जलाते हैं। कुछ भक्त फलाहार के साथ कड़ा व्रत करते हैं। कुछ व्रती एक समय भोजन भी कर लेते हैं। नवरात्र का व्रत-पूजन सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला, व्याधियों और विपत्तियों को दूर कर ऐश्वर्य प्रदान करने वाला है।

पूजन सामाग्री एवं पूजन विधि

पूजा में प्रयुक्त होने वाली सामान्य सामग्रियों के अतिरिक्त 'घट'– मिट्टी का या ताँबे, पीतल अन्य धातु का, केले का खम्भा, आम की पत्तियाँ, नारियल (डाभ) चावल भरा पात्र, जौ, नेवेद्य, गोबर, गोमूत्र, लालवस्त्र, कुमारी पूजन के लिए वस्त्र, गंगाजल की आवश्यकता होती है। नवरात्र पूजन में अंतिम दिन 'होम' करने एवं नौ कुमारी कन्याओं के पूजन एवं उन्हें भोजन करके उनका आशीर्वाद पाने की मान्यता है। नवरात्र में अष्टमी के दिन 'कुलदेवी' की पूजा की भी मान्यता है। इस दिन देवी को उबले चने, हलुवा, पूड़ी, खीर का भोग भी लगाया जाता हैं।

करवाचौथ

कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को करवाचौथ का व्रत किया जाता है। सुहागिन स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत करती है।

इस दिन व्रत करके रात में चन्द्रमा को अर्ध्य देकर भोजन करते हैं।

पूजन सामाग्री-

मिट्टी का करवा अथवा ताँबे, चाँदी या स्टील के लोटे पर लाल कपड़ा बाँधकर करवा बनाकर चीनी, काचर, आँवला, रोली, मोली, चावल, मेंहदी और मैदा के रवाजे इत्यादि।

पूजा का विधान-

पूजन सामाग्री की थाली सजाकर, करवा में जल भरकर, उसके ऊपर चीनी व अन्य सामाग्री रखते हैं। करवा चौथ की कहानी सुनते हैं। दो सुहागिने आपस में करवा बदलकर एक दूसरे को पिलाती हैं और नीचे लिखी हुई पंक्तियों को बोलते हैं।

करबोले ए करबोले, कल कालणी कर बोले, सात भाई की बेन करबोले, चाँदनी में चाँद देखनी करबोले, डूँगर म दूँ लगाणी

करबोले, दिन में चाँद ँॐगाणी करबोले, बरत भाँगणी करबोले, घणी मुख्यालु करबोले, ऊवा सुवा करबोले, सरब सुहागण करबोले।

<u>कहानी</u>

एक साहूकार था। उसके सात बेटे और एक बेटी थी। साहूकार ने बेटी का विवाह किया। जब वह पीहर आई तब करवा चौथ का व्रत आया। सब भौजाइयों ने चौथ का व्रत किया। ननद बोली मैं भी करवा चौथ का व्रत करूँगी। भौजाइयाँ बोलीं आप चौथ का व्रत मत करो, क्योंकि आपसे भूख सही नहीं जाती। पर ननद मानी नहीं। दिनभर व्रत किया, शाम को भूख के कारण से मुँह उतार कर बैठी।

सातों भाई बहिन को साथ में लेकर जीमते थे। खेत से भाई आये। साथ में बोर,काचन्या, फल्याँ, निबुं लाये। बहिन को बोले चलों बहिन, अपन निंबू बोर खावे और जीमे। बहिन बोली भाई आज मेरे चौथ का व्रत है। भाई बोले बाई कब जीमोगी। बहिन बोली चाँद देखकर जीमूँगी।

भाइयों ने सोचा, चाँद उगने तक भूखी रहेगी। एक भाई बोला चाँद तो उगा हुआ है, चलो तुम्हें डुंगर पर चढ़ गया एक घास का पोला ले गया, एक भाई ने अंगार लगाई, एक भाई सामने चालणी पकड़ा, एक भाई बहिन को बुलाने आया। चल बाई तेरा चाँद दिख रहा है देख ले, अरघ देले। जब ननंद ने अपनी भौजाइयों को बुलाया कहा, आवो चाँद दिख रहा है। भौजाइयाँ बोली हमारा चाँद तो चार घड़ी निकलने के बाद रात में दिखेगा, यह चाँद आपका निकला है। आप जाओ हमलोग नहीं आयेगी। बहिन ने अकेली चालणी में चाँद देखकर अर्ध्य दिया।

भाइयों के साथ निबूं, बोर, खाकर सब जीमने बैठे। व्रत भांग लिया। पहला ही ग्रास लिया तो बाल आ गया। दूसरा ग्रास लिया तो कंकड़ आ गया। तीसरा ग्रास लिया तो पति मरे की सुनावणी आई। ससुराल से बुलावा आया जल्दी भेजो। माँ बोली बाई, तुम्हारे भाग्य में यही लिखा है। माँ बोली पेटी के अन्दर से हाथ में आवें वह घाघरा ओढ़ना पहन कर जावो। पेटी में हाथ डालते ही उसके हाथ में काले कपड़े आये, उसने वह कपड़े पहने।

माँ ने सोने का टका (मोहर) देकर मसझाया, बोली बाई तुम जा रही हो, पर रास्ते में जो भी मिले सबके पगे पड़ती जाना। किड़ी, मुँगी, झाड़ झड़ोका सबके और घर में सब छोटे बड़े के पगे पड़ना, जो तुम्हें सुहाग की आशीष देवे उसको यह सोने का टका देकर पल्ले में गाँठ बाँध लेना। वह पीहर से निकली और रास्ते में जो भी मिले सबके पगे पड़ती गई। रास्ते में मिली उनने यह आशीर्वाद दी, सीलो हो सबीरी हो, सात भाइयों की बहिन हो, तुम्हारे भाई सुखी रहें और तुम अपने भाइयों का सुख देखो। उसको कोई सुहाग का आशीष नहीं दिया। स्त्रियाँ बोली पति तो मरा हुआ पड़ा है? क्या पगे पड़ती है? ६ महीने की एक जेठुती पालने में सोई थी, उसके पगे पड़ी, तब वह बोली, ''सीली हो, सपूती हो, बूढ़ सुहागन हो, सात बेटों की माँ हो,'' जेठुती ने उसको आशीर्वाद दिया। ऐसा सुनते ही उसको सोने का टका दिया और पल्ले में गॉठ बाँध ली। वह बोली तुम्हारे काका तो मरे हुए पड़े है सुहागन कहा से हाऊँगी।

वह बोली काकी, तुम काका को जलाने नहीं देना। तब वह मन में बोली इसमें कुछ तो अर्थ है, इतनी छोटी लड़की ने अपने को आशीर्वाद दिया है।

लोग हलावा, चलावा करने लगे, जब उसने मना कर दिया, ले जाने नहीं दिया, लोग नाम रखने लगे, पर उसने किसी की नहीं सुनी। लोगों को देर होने लगी, सो एक नदी के किनारे दोनों जनों के लिये झोपड़ी बाँध दी। और कहा इसकी (मरा हुआ पति) सेवा कर, कीड़े मकोड़े, मक्खियों से इसको बचा, सब प्रकार से इसको बचा। दासी आकर बासी-सूखी रोटियाँ दे जाती, उसी से वह अपना जीवन चलाती।

ऐसे करते करते माघ महिने की माही चौथ आई। उसने केश खुल्ले, दाँत पीसती, आँखे काढ़ती, कड़कडाती, करवा पिया, और बोली, करवो पी ए करवो पी, बिल्लन बाई करवो पी, घणी भुख्याली करवो पी, व्रत भाँगणी करवो पी, सात भायां की बेनड़ करवो पी, फूंक फल्याँ खावणी करवो पी, चालणी में चाँद देखणी करवो पी, ऐसे बोलती रही। वह बोली, माँ मैने इतने ही थोक किये, पर मुझे तुम सुहाग देकर जा। चौथ माता के पाँव पकड़कर बैठ गई और बोली करवा सरीखी कर जावो और करवा दे जावो। चौथ बोली मेरे से बड़ी

चौथ वैशाख की चौथ आयेगी, वह तुम्हें सुहाग देकर जायेगी, मेरे हाथ में नहीं हैं।

वैशाख की चौथ आई। वह भी केश खुल्ले, दाँत पीसती, आँखे काढ़ती, कड़कड़ाती बोली, करवो पीए करवो पी, बिल्लन बाई करवो पी, सात भायां की बेनड़ करवो पी, फूंक फल्याँ खावणी, चालणी में चाँद देखणी करवो पी। वह बोली माँ मैंने इतने ही थोक किये पर मुझे सुहाग देकर जा। पाँव पकड़कर बैठ गई और बोली करवा सरीखी कर जावो। करवा दे जावो। चौथ बोली मेरे से बड़ी भादवे की चौथ आयेगी। वह तुम्हें सुहाग देकर जायेगी उसको तुम छोड़ना नहीं, मेरे हाथ में नहीं हैं।

भादवे की चौथ आई। केस खुल्ले, बिजलियाँ चमकाती, गाजती-घोरती, दाँत पीसती, आँखे काढ़ती, कड़कड़ाती बोली, करवो पीए करवो पी, व्रत भाँगणी करवो पी, सात भायां की बेनड़ करवो पी, फूंक फल्याँ खावणी, चालणी में चाँद देखणी करवो पी। वह बोली माँ मैंने इतने थोक किये, पर मुझे सुहाग देकर जा, ऐसे बोलकर चौथ माता के पाँव पकड़ लिये और बोली करवा सरीखी कर जावो, करवा दे जावो। चौथ बोली मेरे से बड़ी 'करवा चौथ' आयेगी वह तुम्हें जरूर सुहाग देकर जायेगी। तुम उसको छोड़ना नहीं, मेरे हाथ में नहीं हैं।

कार्तिक की करवा चौथ आई, केश बिखेरती, दाँत पीसती, आँखे निकालती बोली, करवो पी ए करवो पी, बिल्लन बाई करवो पी, घणी भुख्याली व्रत भाँगणी, सात भांया की बेनड़ फूंक फल्याँ खावणी, चालणी में चाँद देखणी करवो पी। वह बोली माँ मैनें इतने ही थोक किये। चौथ माता उसको मारने लगी, लबूरने लगी, धक्का देने लगी, पापिणी, हत्यारिणी, बाजु हट मुझे मत छू। वह पक्के पाव पकड़ कर बैठ गई और गिड़गिड़ाने लगी, बोली माँ मैंने इतने ही पाप किये मगर मुझे सुहाग देकर जा। कहने लगी करवा सरीखी कर जावो, करवा देकर जावो। वह चौथ माता को देखकर उसके पाँव पकड़कर गिड़गिड़ाने लगी। हे चौथ माता मेरा सुहाग आपके हाथ में हैं, आप ही मुझे सुहागिन करें। वह माता को बोली मुझ से भूल हुई, उसको क्षमा करो अब भूल नहीं करूँगी। तब माता ने प्रसन्न होकर आँखो में से काजल निकाला, सिर में से मेंण निकाला, नाखूनों से मेंहंदी निकाली, टीका में से रोली निकालकर, चिटली अँगुली से उसके पति पर छींटे दिये और अमृत के छींटे दिये। छींटे देते ही उसका पति जीवित होकर उठकर बैठ गया। चौथ माता अपनी अंतर्ध्यान हो गई। वह बोला बहुत सोया। वह बोली क्या सोये मुझे तो बारह महिने हो गये सेते-सेते। चौथ माता ने सुहाग दिया है। तब वह बोला जल्दी चौथ माता का उछाव करो उजरणा करो। तब उन्होंने चौथ माता की कहानी सुनी, करवा पूजन किया, खूब चूरमा बनाया, प्रसाद खाकर दोनों पति-पत्नी चोपड़ पासा खेलने बैठ गये।

गाँव का एक ग्वाल था, वह रोज गायें चराने आता था। रोज निगरानी रखता था। वह रोज उसको उसकी (मुर्दा) सेवा करती देखता, आज वह जवान आदमी के साथ चोपड़ पासा खेलती दिखी। ग्वाले को बुलाकर बोली तुम हमारे घर संदेशा दो कि हमें सामने लेवें। ग्वाला बोला आज तक तो अच्छी थी, अब खराब हो गई। उसके घर आकर बोला अपने बेटे बहू को सामने लेवो। माँ बाप बोले हमारे बेटे को मरे एक वर्ष हो गया, पर फिर भी चलकर देखो तो सही। आके देखा तो बेटा बहू चौपड़ पासा खेल रह थे। डल्ली तीर बेटा को खड़ा किया पल्ली तीर बहू को खड़ी किया, दोनों के गन्जोड़े जुड गये। माँ को लोहे की काँचली पहना दी, बत्तीस धारा फूट कर बेटे के मुँह में पड़ गई।

विश्वास आ गया कि मेरा ही बेटा है। सासू पूछी क्या बात हुई, जब बहू बोली मुझे तो चौथ माता टूठी है, यह कहकर सासू के पगे पड़ी।

और सारी नगरी में हेला फिरा दिया, पुरूष की लुगाई, बेटे की माँ सब कोई चौथ का व्रत करना, १३ चौथ करना, नहीं तो ४ चौथ करना, नहीं तो दो चौथ सब कोई करना। जब से सब स्त्रियाँ करवा चौथ का व्रत करने लगी। तब से सारे गाँव में यह प्रसिद्धि होती गई कि सब स्त्रियाँ चौथ व्रत करे तो सुहाग अटल रहेगा। हे चौथ माता! जैसे साहूकार की बेटी को सुहाग दिया, उसी तरह से हमें भी सुहागन रखना। साहूकार की बेटी की तरह दु:ख मत देना, यही पुरातन करवा चौथ के व्रत की महिमा है। कहानी कहते को, सुनते को, हुँकारा भरते को, अपने सब परिवार को देना। खोटी की खरी अधूरी की पूरी मानना।

दीपावली

कार्तिक कृष्णा अमावस्या को दीपावली का त्यौहार आता है। यह हम भारतीयों का सबसे बड़ा त्यौहार है। जो घट-घट में धूम-धाम से पूजा-अर्चना करते हुए, असंख्य दीपों को जलाकर, मिष्ठान बनाकर, पटाखे छोड़कर मनाया जाता हैं। दीपावली अपने साथ पाँच त्यौहारों की अनूठी श्रृंखला और उनसे जुड़ी अलग-अलग पौराणिक कथाओं को लाता है। **(१) धनतेरस या धनत्रयोदशी–** यह दीपावली का पहला दिन हैं। **(२) नरक चतुर्दशी–** यह दीपावली का दूसरा दिन हैं इसे रुप चतुदर्शी भी कहते हैं। **(३) दीपावली-** दीपावली का यह तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन शुभ-लाभ और स्वास्तिक चिन्ह के अंकन के साथ लक्ष्मी-गणेश का पूजन करके हम राष्ट्रलक्ष्मी का आह्वान करते है और दीपों के प्रकाश में असत् से सत् की ओर बढ़ने की कामना करते हैं। **(४) प्रतिपदा-** यह दीपावली का चौथा दिन है जिसका दो दृष्टि से महत्व है। दीपावली का त्योहार मनाकर इस दिन लोग एक दूसरे से मिलते हैं। शुभ कामानाएँ देते हैं। यह दिन प्रीति-मिलन या 'रामासामा' के नाम से जाना जाता है। इस दिन गोवर्धन पूजा और अन्नकूट का आयोजन होता है। **(५) भाईदूज-** दीपावली का यह पाचवाँ दिन। भाई-बहन के प्रेम त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। इसे यम द्वितीया भी कहते हैं।

चूँकि यह दीपों का विशेष त्यौहार है इसलिए इन दिनों में दिए कैसे जलाया जाएँ इसे जानना जरूरी है-

दीयों की पूजा धनतेरस से भाई दूज तक पाँच दिन सांयकाल में करते हैं। धनतेरस को तेरह दीए, रूप चतुर्दशी को चौदह दीए, दीपावली को सोलह, इक्कीस, इक्यावन या एक सौ एक दीए जलाने की विधान है। इसके बाद प्रतिपदा को चौदह दीए, द्वितीया को तेरह दीए जलाते हैं। धनतेरस, चतुर्दशी व दीपावली को नए दीए जलाए जाते हैं। जबकि बाद के दो दिनों में पुराने दीयों मे नई बत्ती लगाकर जलाने का विधान है। यदि इतनी संख्या में दीए नहीं लगा सके तो पाँच दिए लगाकर पूजा कर लेनी चाहिए। इन दीयों को तिल के तेल से जलाना उत्तम माना जाता है। पूजा में सांय काल पाटे पर दीया रखकर, जलाकर घर के सभी सदस्य पूजा कर, दीयों को हाथ जोड़ फिर बड़ो को प्रणाम कर आशीर्वाद ले ऐसा विधान है। पूजन के बाद इन दीयों को घर में और बाहर अलग-अलग स्थान पर रखना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो नए वस्त्र पहनकर पूजा करनी चाहिए। नरक चतुर्दशी के दिन आटे का या मिट्टी का चौमुखा दीया और बत्ती लगाकर, तेल से भरकर घर के आगे मुख्य द्वार पर बाई ओर या चौरास्ते पर रखकर यमराज से अकाल मृत्यु से निवारण की प्रार्थना करनी चाहिए।

आँवला नवमी

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को आँवला नवमी (अक्षय नवमी) कहते हैं। इस दिन आँवले के वृक्ष की पूजा की जाती है। इस दिन की गई पूजा और दिये हुए दान का पुण्य अक्षय होता है। यह व्रत सुख-सौभाग्य को बढ़ाने वाला है।

पूजा का सामान– जल का लोटा, कच्चा दूध, मोली, कच्चा सूत, एक ब्लाउज पीस, कुमकुम, चावल, पुष्प, दीपक, बत्ती, घी, माचिस, अगरबत्ती, कपूर, बताशा, आँवला, रुपया आदि।

विधान– प्रात: स्नान करके आँवले के वृक्ष के नीचे पूर्व दिशा में बैठकर पूजन करना चाहिए। पूजन के बाद उसकी जड़ में दूध और जल की धार चढ़ानी चाहिए। इसके बाद पेड़ के चारों ओर कच्चा सूत लपेटते हुए आठ या एक सौ आठ परिक्रमा करनी चाहिए। आरती के बाद पेड़ के नीचे ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए। यदि सम्भव हो तो स्वयं भी वहाँ बैठकर भोजन या मिठाई फल ले लेना चाहिए।

कहानी-

एक सेठ आँवला नवमी के दिन आँवले के पेड़ के नीचे ब्राह्मणों को भोजन कराया करता था। सोने का दान भी किया करता था। उसके बेटों को यह सब अच्छा नहीं लगता था। एक दिन घर के कलह से तंग आकर वह सेठ घर छोड़कर दूसरे गाँव में चला गया। उसने वहाँ जीवन-यापन के लिए एक दुकान कर ली। उसने दुकान के आगे एक आंवले का पेड़ लगाया। उसकी दुकान खूब चलने लगी। वह यहाँ भी आँवला नवमी का व्रत करने लगा तथा उसने ब्राह्मणों को भोजन तथा दान का कार्यक्रम भी चालू रखा।

इधर बेटों का रोजगार ठप हो गया। उनकी समझ में यह बात आ गई थी कि हम तो पिताश्री के भाग्य से रोटी खाते थे। यह सोचकर बेटे अपने पिता के पास गये और अपनी गलती स्वीकार कर ली। पिता की आज्ञानुसार वे भी आँवले के पेड़ की पूजा करने लगे। उनके यहाँ पहले जैसी खुशहाली हो गई। खोटी की खरी अधूरी की पूरी।

देवोत्थान एकादशी

कार्तिक शुक्ला एकादशी को देवोत्थान एकादशी कहा जाता है। इस दिन स्नान दान और उपवास का विशेष महत्व है। इस दिन के बाद से हिन्दुओं में विवाह आदि शुभ कार्य प्रारंभ हो जाते हैं।

इस दिन जमीन पर चूने और गेरू से देव माँडते हैं। माँडे हुए देवे को लकड़ी के पाटे या पीतल की परात से ढ़क देते हैं। शाम को जल, मोली, रोली, चावल, गुड़, गन्ना, चार मठरी, चार केले, सवा सेर चावल, ग्वारफली, दक्षिणा चढ़ाकर पूजा की जाती है। दीपक जलाकर बधावा गाते हैं।

तुलसी जी का विवाह

इस दिन तुलसी जी का शलिग्राम जी के साथ विवाह करते हैं। तुलसी के गमले को चूने और गेरू से माँडकर सजाते हैं। तुलसी जी पर गन्नों का मंडप बनाते हैं। एक साड़ी, ब्लाउज, मेंहदी, काजल, बिन्दी, सिंदूर, चूड़ी, आदि चढ़ाते हैं। पंडित अथवा स्वयं पूजन कर विवाह संस्कार करवाते या करते हैं। फिर तुलसी जी की परिक्रमा करते हैं।

इस सबंध में कथा है कि 'भाद्रपद' एकादशी को ही भगवान विष्णु ने शंखासुर नामक राक्षस को मारा था। और थक कर शयन करने चले गये, और फिर कार्तिक शुक्ला एकादशी को ही नेत्र खोले थे।

मकर संक्रान्ति

मकर की बड़ी संक्रान्ति कभी पौष व कभी माघ माह में आती है। अंग्रेजी तारीख के हिसाब से यह चौदह जनवरी को आती है। कभी-कभी इसकी मान्यता पन्द्रह जनवरी को मानी जाती है। मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। इसके पूर्व वे दक्षिणायण रहते हैं। पूरे भारतवर्ष में अपने-अपने प्रान्तो के रीति-रिवाजों के साथ इस त्यौहार को बड़ी श्रद्धा पूर्वक मनाया जाता है।

इस महापर्व पर प्रात: उठकर सफेद तिलों का उबटन लगाकर गंगा स्नान, सरोवर स्नान या जल में गंगाजल व तिल डालकर स्नान करते हैं। संक्रांति लगने के बाद ब्राह्मणों व गरीबों को यथाशक्ति दान देते हैं। इसमें तिल के दान का विशेष महत्व है। सफेद व काले तिल के लड्डू, खिचड़ी, सीधा, वगैराह मंदिरों में ब्राह्मणों को देते हैं। 'दान-पुण्य' इस त्योहार का केन्द्र बिन्दु है। इस दिन दिया गया दान सूर्य की कृपा से दाता को जन्म-जन्म में मिलता हैं। स्नान करने के बाद मंदिर दर्शन कर, घेवर, तिल के लड्डू या अन्य कोई भी मिठाई पर रुपया रखकर 'कल्पना' निकालकर सास या किसी बड़े जन को देते हैं। भिखारियों को भी रुपया-पैसा, तिल के लड्डू, खिचड़ी, वस्त्रादि का दान करते हैं।

इस दिन हमारे पूरे भारतवर्ष का आकाश बड़े व बच्चों की रंग-बिरंगी उड़ती हुई पतंगों से भरकर हमें आनन्द देता है।

माही चौथ

माघ कृष्ण चतुर्थी को माही चौथ आती है। इसे तिल चौथ भी कहते हैं। इस दिन गणेश जी की पूजा, व्रत और कहानी कहनी चाहिए और रात्रि में चन्द्रमा को अर्ध्य देकर भोजन करना चाहिए।

पूजा का सामान-

जल का लोटा, हल्दी की गाँठ, कुंकुम, सिन्दूर, मेहंदी, मोली, पुष्प, दूब, दीपक, अगरबत्ती, गेहूँ के दाने, तिलकुट, गुड़, पान, सुपारी, रुपया।

कहानी -

एक साहूकार साहूकारिणी थे। वे धर्म-कर्म, पुण्य व्रत आदि कुछ भी नहीं करते थे। उनके कोई सन्तान भी नहीं थी। माघ का महीना आया। एक दिन साहूकारिणी पड़ोसन के यहाँ अग्नि माँगने गई। तब वहाँ स्त्रियाँ चौथ माता की पूजा करने बैठी थीं। उसने पूछा यह किसकी पूजा है? और इसको करने से क्या होता है? तब पड़ोसिन बोली हम लोग चौथ माता की पूजा कर रहे हैं, और कहानी सुन रहे हैं। स्त्रियाँ बोली इसको करने से बाँझ को पुत्र होते हैं, बिछुड़ों का मेल होता है, अन्न होता है, धन होता है, चौथ माता सुहाग देती है। वह बोली मेरे भी बेटा नहीं है। स्त्रियाँ बोली हे चौथ माता! इसके नौंवे महीने का बेटा होवे तो सवासेर का तिलकुट्टा करेंगे। भगवान की कृपा हुई। नौवे महीने बेटा हुआ। वह तो तिलकुट्टा (चौथ माता का प्रसाद) करना भूल गई।

फिर बोली हे चौथ माता यह बड़ा हो जायेगा तो तुम्हारे सवा पाँच सेर का तिलकुट्टा चढ़ाऊँगी। वह भी भूल गई। फिर बोली हे चौथ माता इसका विवाह हो जावे तो तुम्हारे ग्यारह सेर का तिलकुट्टा चढ़ाऊँगी। विवाह मँड़ गया तिलकुट्टा चढ़ाना भूल गई। परनीजने को गया एक फेरा लिया, दूसरा फेरा लिया, तीसरे फेरे में गायब हो गया। बहुत ढूँढ़े। देवता का नाम नीमण करे, बोलवा की, पर तिलकुट्टा चढ़ाना भूल गये। बेटा मिला नहीं बहू को घर लेकर आ गये।

यहाँ स्त्रियां पानी भरने जाती थीं जब यह भी जाती थी। सब स्त्रियां पानी भर लेती तब बहू पानी भरने जाती। हाथों में मेंहदी रचनी, जामा पहनें, तुर्रा किलंगी लगाये हुए वह बोलता एक धोबा, दो धोबा, तीजा धोबा अधपरणी को। वह सासू को आकर बोलती। मैं पानी भरने जाती हूँ तब मुझे रोज ऐसे सुनाई पड़ता है। सासू बोलती ऐसे ही सुनाई पड़ता होगा, ध्यान नहीं दिया। वापस चौथ आई । वह पड़ोस में गई, वहाँ स्त्रियां चौथ का व्रत करके पूजा कर रही थी। उसको एकदम ध्यान आया, मेरे बेटा नहीं था, तब मैनें सवा सेर का तिलकुट्टा बोला था। हे चौथ माता ! मेरा बेटा मिल जायेगा, तो मैं तुम्हारे सवा मन का तिलकुट्टा चढ़ाऊँगी। दूसरे दिन स्त्रियां पानी भरने गई तब, आगे देखे तो उसका बेटा तालाब की तीर पर बैठा हुआ दिखाई दिया। मेरी माँ को कहना मुझे सामने लेवें। वह बोली मेरे मन को तो विश्वास आ जायेगा, पर दुनियाँ को नहीं आयेगा। इस तीर बेटे को, उस तीर बहू को खड़ी किये तब दोनों का गंठजोड़ा अपने आप जुड़ गया। माँ को लोहे की काँचली पहनाई। बत्तीसधारा फूटकर उसके मुँह में पड़ गई, सबको विश्वास आ गया।

सवा मन का तिलकुट्टा करके, चौथमाता का व्रत करके, पूजा पाठ करके, भोग लगाकर पूरे गाँव में प्रसाद बाँटा। हे चौथमाता! उसको बेटा दियो वैसे सबको देना।

कहानी कहने वाले को और हुँकारा भरने वाले को भी देना।

होली

होली का पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। होली के आठ दिन पहले से होलाष्टक प्रारम्भ होते हैं। होलाष्टक के दिनों में कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता है। होली एक सामाजिक पर्व है। यह रंगों का त्यौहार है। इस पर्व को सभी वर्णों के लोग, आपस का भेदभाव मिटाकर, बड़े उत्साह से मनाते हैं। इस दिन सायं काल के बाद भद्रा-रहित लग्न में होलिका दहन किया जाता है। इस अवसर पर लकड़ियाँ तथा घास-फूस का बड़ा भारी ढेर लगाकर होलिका पूजन करके उसमें आग लगाई जाती है।

पूजा का विधान व पूजा सामाग्री -

बड़कुले (गोबर से बने, सूखे हुए, बीच में छेद वाले बटिये) की माला, गन्ना, मोली, रोली, चावल, फूल, गुलाल, गुड़, कच्चे सूत की लड़ी, जल को लोटा, नारियल, गेहूँ या चने की डाली आदि से जिस स्थान पर होली जलाई जाती है वहाँ होली का पूजन करना चाहिए। प्रसाद स्वरूप गेहूँ या चने की डाली को भूनकर घर पर ले आया जाता है।

पूर्व में दिये गये व्रतों की उद्यापन विधि

किसी व्रत की समाप्ति पर किये जाने वाला कृत्य उद्यापन कहलाता है। व्रत करने के बाद उसका उद्यापन अवश्य ही करना चाहिए। उद्यापन करने से व्रतों का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है। यदि व्रत करने वाला व्रत करने के पश्चात् उसका उद्यापन नहीं करे तो वह यथावत फल का भागी नहीं होता। सब व्रतों का उद्यापन विवाह के बाद करना चाहिए। रजस्वला अवस्था में, गर्भावस्था में और तारा में उद्यापन नहीं करना चाहिए।

(१) सूरज रोटा का उद्यापन-

इस व्रत में ८ सुहागिन स्त्रियों या ब्राह्मणियों को तथा सास को भोजन कराया जाता है। यदि स्त्रियाँ सूरज रोटा का व्रत करती हों तो उन्हें रोट, शक्कर, दही खिलाना चाहिए। व्रत नहीं करने वाली स्त्रियों को इच्छानुसार कोई भी रसोई खिलायी जा सकती है। परन्तु रसोई परसने से पहले एक रोट खाना जरूरी होता है। भोजन कराने के पश्चात् तिलक करके साड़ी ब्लाउज या रुपया अपनी श्रद्धानुसार देना चाहिए।

(२) गणगौर का उद्यापन—

गणगौर के उद्यापन में १६ सुहागिन स्त्रियों तथा सास को भोजन कराना चाहिए। भोजन कराने के पश्चात् सास को साड़ी ब्लाउज तथा सुहाग पिटारी का सामान दिया जाता है। १६ सुहागिन स्त्रियों को सुहाग पिटारी या रुपया, नारियल भी दिया जा सकता है। सुहाग पिटारी में ब्लाउज, बिछिया, चूड़ी, बिन्दी, मेंहदी, कंघा, काजल, सिंदूर, पाउडर, लिपिस्टिक आदि शृंगार का कुछ भी सामान रख सकते हैं।

(३) छोटी तीज का उद्यापन—

इस व्रत में १६ सुहागिन स्त्रियों को भोजन कराने के पश्चात् तिलक करके ब्लाउज पीस या रुपया, नारियल देना चाहिए।

(४) बड़ी तीज (कजली तीज) का उद्यापन—

इस व्रत में १६ सुहागिन स्त्रियों तथा सास को सातू का पिंडा दिया जाता है। इसलिये जिस अनाज (गेहूँ, चावल, चने, जौ) का सातू हो उसके १६ पिंडे बनाने चाहिए। एक पिंडा सवा सेर का सास का तथा १६ पिंडे सवा पाव के बनाने चाहिए। साथ में नीमड़ी माता के नाम से एक-एक छोटा सातू का लड्डू रखना चाहिए।

सभी स्त्रियों को तीज के पहले दिन ही सातू का पिंडा तथा श्रद्धानुसार ब्लाउज पीस या रुपया भेज देना चाहिए। सवा सेर का सातू का पिंडा तथा साड़ी ब्लाउज अपनी श्रद्धानुसार सास को पूजा करने के पश्चात् पैर पकड़कर देना चाहिए।

(५) चौथ का उद्यापन—

सभी चौथ के उद्यापन में सुहागिन स्त्रियों तथा सास को भोजन करा करके रुपया, नारियल देना चाहिए। भोजन अपने घर में करायें अथवा टिफिन लगाकर साथ में रुपया नारियल अपनी श्रद्धानुसार रखकर भेज देना चाहिए। करवा चौथ के उद्यापन में १० सुहागिन स्त्रियों को घर में भोजन करायें या टिफिन भेज दें। कुछ लोग भोजन की जगह १० खाजा या मिठाई तथा रुपया नारियल भी भेज देतें है। इस दिन सास को भोजन कराकर साड़ी, ब्लाउज, रुपया, नारियल, गहना, अपनी श्रद्धानुसार देना चाहिए।

(६) उबछट का उद्यापन—

इस व्रत में १३ ब्राह्मणी या स्त्रियों को भोजन कराकर रूपया नारियल देना चाहिए ।

(७) बछवारस का उद्यापन—

इस व्रत के उद्यापन में सुबह गाय की पूजा करनी चाहिए। गाय को श्रद्धानुसार साड़ी या ब्लाउज पीस उढ़ाकर, ग्वाले को रुपया दे देना चाहिए। दोपहर में १३ सुहागिन स्त्रियों तथा सास को भोजन कराना चाहिए। और रुपया नारियल देना चाहिए। इस दिन भोजन में गेहूँ तथा चावल से बनी चीज नहीं खिलानी चाहिए। तथा इस दिन चाकू से कटी चीज भी नहीं खिलानी चाहिए। अगर आप भोजन नहीं कराना चाहें तो एक पाव का चने का सातू का पिंडा भी दिया जा सकता हैं।

(८) ऋषि पंचमी का उद्यापन—

इस व्रत में ५ ब्राह्मणों को फलाहारी भोजन करा कर रुपया नारियल देना चाहिए।